सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 218 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार 15 सितम्बर, 2026
मूल्य ₹ 3/-

जो समय बचाते हैं, वे धन बचाते हैं और बचाया हुआ धन, कमाएं हुए धन के बराबर है।
-महात्मा गाँधी

भारत और अफगानिस्तान का दूसरा टी20... 7 | चक्रव्यूह की रचना में जुटी... 3 | भाजपा सरकार ने दस वर्षों में... 2

दिल्ली हाईकोर्ट ने नहीं दी राहत, चलेगा मुकदमा

विमल इलायची का विज्ञापन कर फंस गये शाहरूख, अजय, टाइगर

» इलायची के बहाने जुबां केसरी का खेल नहीं चलेगा

» विसिल ब्लोअर संजय शर्मा ने नॉक किया था मुद्दा

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जोर का झटका हाय धीरे से लगा, जी हां इलायची के नाम पर जुंबा केसरी का झोल देकर पान मसाले का रास्ता बताने वाले बालीवुड के तीन कलाकार बाजीगर शाहरूख खान, सिंघम अजय देवगन और टाइगर यानी कि टाइगर श्रॉफ फंस गये हैं। दिल्ली हाईकोर्ट ने विमल इलायची के सेरोगेट विज्ञापन पर राहत देने से इंकार कर दिया है। कोर्ट ने शो कॉज नोटिस पर दायर याचिका पर सनुवाई से इंकार कर तीखी टिप्पणी भी की है।

यह याचिका पीबी एग्रो एलएलपी ने दाखिल की थी और महाराष्ट्र खाद्य एंव औषधि प्रशासन ने चमकते सितारों को नोटिस जारी किया था। शाहरुख खान, अजय देवगन और टाइगर श्रॉफ तीन बड़े नाम करोड़ों की फैन फॉलोइंग विज्ञापन बाजार में जबरदस्त कीमत और चेहरे पर भरोसा। यही वजह है कि जब यह तीनों जब किसी प्रोडक्ट को कैमरे के सामने पेश करते हैं तो वह सिर्फ प्रोडक्ट नहीं रहता वह एक संदेश बन जाता है। अब उसी संदेश पर महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने गंभीर सवाल उठाये हैं और तीनों को नोटिस जारी किया है। इन पर आरोप है कि विमल इलायची का विज्ञापन अपने ब्रांड नाम प्रस्तुति और पहचान के जरिए उस विमल पान मसाला ब्रांड का अप्रत्यक्ष प्रचार कर सकता है जिस पर महाराष्ट्र में प्रतिबंध है।

दिल्ली से महाराष्ट्र तक

पीबी एग्रो एलएलपी ने दिल्ली हाईकोर्ट का दरवाजा इसलिए खटखटाया था क्योंकि वह महाराष्ट्र एफडीए के नोटिस को चुनौती देना चाहता था। कंपनी की दलील थी कि संबंधित केंद्रीय स्वास्थ्य व्यवस्था और उसका मुख्यालय दिल्ली में है और इसलिए दिल्ली हाईकोर्ट इस मामले को सुन सकता है। लेकिन न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया। अदालत ने माना कि सिर्फ कंपनी का दिल्ली में कारोबार होना या ब्रांड एंबेसडरों का दिल्ली में होना क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र तय करने के लिए पर्याप्त नहीं है। कार्रवाई महाराष्ट्र एफडीए की है और उसका मूल कारण भी महाराष्ट्र में है। इसलिए महाराष्ट्र की अदालत इस विवाद के लिए अधिक उपयुक्त मंच है।

महाराष्ट्र की अदालत उपयुक्त मंच है

दिल्ली हाईकोर्ट ने 14 सितंबर को पीबी एग्रो एलएलपी की उस याचिका को खारिज कर दिया है जिसमें महाराष्ट्र एफडीए द्वारा शाहरुख खान, अजय देवगन और टाइगर श्रॉफ को जारी शो कॉज नोटिस को चुनौती दी गयी थी। अदालत ने साफ कह दिया है कि केवल कंपनी का दिल्ली से कारोबार करना या संबंधित पक्षों का दिल्ली में होना इस मामले में दिल्ली हाईकोर्ट का क्षेत्राधिकार तय नहीं करता। कार्रवाई महाराष्ट्र के नियामक ने की है और विवाद का केंद्र महाराष्ट्र है इसलिए महाराष्ट्र की अदालत अधिक उपयुक्त मंच है। इस फैसले से शाहरूख, अजय और टाइगर को झटका लगा है क्योंकि सवालों के जवाब देने से बचने का जो रास्ता उन्होंने अख्तियार किया था वह बंद हो गया। अब वह सवाल वहीं खड़े हैं जहां से निकले थे यानि कि महाराष्ट्र में।

शाहरूख-अजय-टाइगर जवाब दो

क्या करोड़ों रुपये की फीस लेकर किसी ब्रांड का चेहरा बन जाना उस चेहरे की सामाजिक जिम्मेदारी को खत्म कर देता है? क्या सेलिब्रिटी सिर्फ कैमरे के सामने संवाद बोलने वाला व्यक्ति है या उसके पास उस उत्पाद की छवि और उसके संभावित असर की जांच करने की भी कोई नैतिक जिम्मेदारी है? और सबसे बड़ा सवाल कि अगर किसी उत्पाद का विज्ञापन तकनीकी रूप से इलायची का है लेकिन ब्रांड की पहचान उपभोक्ता के दिमाग में किसी दूसरे प्रतिबंधित उत्पाद से जुड़ी हो तो क्या सिर्फ पैकेट पर इलायची भर लिख देने से कहानी बदल जाती है? इस झोल को तकनीकी भाषा में सरोगेट विज्ञापन कहा जाता है। और यहीं से विमल इलायची की कहानी एक साधारण विज्ञापन विवाद से निकलकर पैसा, स्टारडम, ब्रांड और सार्वजनिक स्वास्थ्य के टकराव की कहानी बन जाती है।

मामूली नहीं हैं सवाल

11 अगस्त को जारी नौ पन्नों के नोटिस में एफडीए ने कहा है कि विज्ञापन में इस्तेमाल विमल नाम और उसकी प्रस्तुति उपभोक्ता के मन में पान मसाला ब्रांड से संबंध पैदा कर सकती है। तीनों अभिनेताओं से उनकी भूमिका स्पष्ट करने प्रचार अभियान से हटने और संबंधित प्रचार सामग्री हटाने को कहा गया था। विमल मामले में एफडीए का मूल सवाल यही है कि विज्ञापन में इलायची है लेकिन नाम वही विमल है, चेहरे वही शाहरुख खान, अजय देवगन और टाइगर श्रॉफ वाले हैं और जिस ब्रांड पहचान से उपभोक्ता पहले से परिचित है उसके साथ पान मसाला भी जुड़ा हुआ है। महाराष्ट्र में फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड एक्ट के तहत तंबाकू या निकोटीन युक्त गुटखा और पान मसाला पर प्रतिबंध है जोकि 13 जुलाई 2026 से वर्तमान प्रतिबंध आदेश तक प्रभावी है। इसलिए मामला सिर्फ यह नहीं है कि विज्ञापन में पान मसाला का पैकेट दिखा या नहीं दिखा। मामला यह है कि क्या एक ऐसे ब्रांड की चमक को बनाए रखने के लिए दूसरे उत्पाद का इस्तेमाल किया जा रहा है जिसकी पहचान प्रतिबंधित उत्पाद से गहराई से जुड़ी है?

कंपनी का दागदार इतिहास बेपरवाह वर्तमान

2018 में भी विमल इलायची को लेकर अप्रत्यक्ष तंबाकू विज्ञापन के आरोपों पर डीजीएचएस की कार्रवाई सामने आयी थी। बाद में उस विवाद में कानूनी लड़ाई चली और जनवरी 2024 में दिल्ली हाईकोर्ट ने डीजीएचएस की अपीलें खारिज की थीं। उस मामले में अदालत ने तंबाकू रहित पान मसाला के कारोबार के संवैधानिक अधिकार का भी उल्लेख किया था। इसलिए मौजूदा विवाद को बिल्कुल शून्य से शुरू हुई कहानी कहना भी गलत होगा।

भाजपा सरकार ने दस वर्षों में किसानों को सिर्फ धोखा दिया: अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख से प्रदेश के किसानों और खापों के चौधरियों ने भेंट की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि 27 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर किसानों को गन्ना मूल्य 24 घंटे में भुगतान होगा। किसानों को भरपूर बिजली दी जाएगी। इसी के साथ उन्होंने भाजपा सरकार को भी आड़े हाथों लिया। सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से सोमवार को प्रदेश पार्टी मुख्यालय पर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों और कई खापों के चौधरियों ने भेंट की। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल मौजूद रहे।

अखिलेश यादव ने किसानों से बात करते हुए कहा कि 27 का विधानसभा चुनाव किसानों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह चुनाव किसानों के भविष्य का चुनाव है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने दस वर्षों में किसानों को धोखा दिया है। इस सरकार में किसानों को कभी समय पर खाद-बीज नहीं मिल पाया। भाजपा सरकार में कमीशनखोरी और मुनाफाखोरी चरम पर है। जब किसानों को खाद की जरूरत होती है, तब खाद गायब हो जाती है।

अखिलेश यादव ने कहा कि 27 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर किसानों को गन्ना मूल्य 24 घंटे में भुगतान होगा। किसानों को भरपूर बिजली दी जाएगी। खाद, बीज, पानी, सिंचाई की समुचित व्यवस्था होगी। समाजवादी पार्टी सरकार में प्राथमिकता से गांवों का विकास होगा। किसानों ने कहा कि उन्हें अखिलेश यादव पर भरोसा है। वे कृषि और कृषक परिवारों की परेशानियों से परिचित है। अपनी सरकार में उन्होंने खेती का बजट बढ़ाया था। इस अवसर पर बुढ़ाना मुजफ्फरनगर के चौधरी विरेंद्र प्रधान ने अखिलेश यादव को हल भेंट किया। बागपत के किसानों ने अपने हुक्का के साथ भेंट की।

सपा का आगरा में करेगी दलित महासम्मेलन

बहुजन समाज पार्टी में मची उठापटक और यूपी चुनाव को देखते हुए समाजवादी पार्टी ने दलित वोटरों पर फोकस बढ़ा दिया है। इसकी क्रम में सपा 15 नवंबर को दलित महासम्मेलन आयोजन करेगी। जिसकी शुरुआत आगरा से होने जा रही है। इस कार्यक्रम में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव भी मौजूद रहेंगे। इस कार्यक्र म में आसपास से बड़ी संख्या में सपा कार्यकर्ता शामिल होंगे। समाजवादी पार्टी ने आगरा का चुनाव भी इसलिए किया है क्योंकि यहां जाटव समुदाय पहले से ही अपेक्षाकृत संगठित, शिक्षित और आर्थिक रूप से थोड़ा मजबूत था, अंबेडकरवादी चेतना भी यहां गहरी थी। कांशीराम ने इन्हीं शहरी, शिक्षित दलित कर्मचारियों और छोटे व्यापारियों को बामसेफ के जरिए जोड़ा. यही आधार बाद में डीएस-4 और बसपा का बना। पिछले कई सालों से अखिलेश यादव की नजर यूपी के दलित वोटरों पर है. इसी वजह से उन्होंने पहले मायावती से गठबंधन किया था हालांकि 19 लोकसभा में उन्हें इसका फायदा नहीं हुआ था, लेकिन, मायावती के साथ आने से उन पर दलित विरोधी होने का आरोप फीका पड़ गया 22 और 24 के चुनाव में अखिलेश यादव को इसका फायदा हुआ।

सपा ने की डुप्लीकेट मतदाताओं की जांच की मांग

समाजवादी पार्टी ने 14 सितंबर मुख्य निर्वाचन अधिकारी को एक ज्ञापन सौंपा। पार्टी ने इटावा के 20-इटावा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र में दोहरे मतदाताओं की जांच की मांग की है। इसमें 458 मतदान केंद्रों पर 3000 से अधिक दोहरे और फर्जी मतदाताओं के नाम हटाने की मांग की गई है। ज्ञापन में बताया गया है कि कई मतदान बूथों पर एक ही मतदाता का नाम, संबंधी का नाम, उम्र और निवास का पता कई बार दर्ज है। हालांकि इन सभी प्रविष्टियों के लिए इपिक संख्या अलग-अलग हैं। सपा के प्रदेश सचिव केके श्रीवास्तव, डॉ. हरिश्चंद्र सिंह यादव और राधेश्याम सिंह ने यह ज्ञापन सौंपते हुए कार्रवाई की मांग की है।

राजस्थान निकाय चुनाव के नतीजों में धांधली: मायावती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। बसपा प्रमुख मायावती ने राजस्थान में हुए निकाय चुनाव के नतीजों में धांधली का भी आरोप लगाया है। हालांकि बहुजन समाज पार्टी ने 19 पार्षद सीटों पर जीत दर्ज की है। जिस पर बसपा सुप्रीमो मायावती ने पार्टी के कार्यकर्ताओं और तमाम पदाधिकारियों को जीत की बधाई देते हुए खुशी जताई है। बसपा अध्यक्ष मायावती ने राजस्थान निकाय चुनाव के नतीजों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि कई सीटों पर सरकारी मशीनरी की गड़बड़ी हुई है। जहां दोबारा गिनती में जबरदस्ती उनके प्रत्याशियों को थोड़े-थोड़े अंतर से हरा दिया गया। बसपा सुप्रीमो ने कहा कि अगर नतीजों के दौरान धांधली नहीं की जाती तो पार्टी के नतीजो और भी अच्छे हो सकते थे।

मायावती ने एक्स पर लिखा- राजस्थान में हुए निकाय चुनाव में बीएसपी ने भी इस बार 19 सीटों पर अपने पार्षद जिताकर भेजे हैं और काफी उम्मीदवार सरकारी मशीनरी की गड़बड़ी की वजह से दोबारा गिनती में जबरदस्ती थोड़े-थोड़े वोटों के अन्तर से हरा दिये गये हैं, वरना पार्टी का यहाँ और भी अच्छा रिजल्ट आ सकता था। बसपा चीफ ने कहा- इसके लिए पार्टी ने बीएसपी के सभी छोटे-बड़े पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें दी हैं हालांकि इससे पहले पंजाब सहित देश के कुछ और राज्यों में भी जो स्थानीय निकाय के चुनाव हुए हैं, तो वहाँ भी पार्टी का पहले से अच्छा नतीजा आया है और वे भी बधाई के पात्र हैं। उम्मीद है कि अब वहां आगे होने वाले विधानसभा, आम चुनाव में व देश में लोकसभा आम चुनाव में भी वे सभी लोग अपनी पार्टी का बेहतर रिजल्ट जरूर लाएंगे। बता दें कि राजस्थान निकाय चुनाव में बीजेपी के बड़ी जीत हासिल कर प्रदेश की दस नगर निगम सीटों पर कब्जा कर लिया है, जहां बीजेपी का मेयर बनना तय हो गया है, बसपा के साथ कांग्रेस पार्टी ने इन चुनाव के नतीजों को लेकर सवाल उठाए हैं और कई सीटों पर गड़बड़ी होने का अंदेशा जताया है।

लोहिया ट्रस्ट से हटे शिवपाल यादव ओम प्रकाश राजभर ने साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव अब लोहिया ट्रस्ट के भी मुखिया हैं। अब तक इस ट्रस्ट की अध्यक्षता जसवंतनगर से विधायक और अखिलेश के चाचा शिवपाल सिंह यादव कर रहे थे। लोहिया ट्रस्ट में हुए बदलाव पर सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के नेता और योगी सरकार में पंचायती राज मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने प्रतिक्रिया दी है।

उन्होंने इस बदलाव की असली वजह भी बताई है सुभासपा चीफ ने कहा है कि अखिलेश को शिवपाल पर भरोसा ही नहीं है। उन्होंने कहा कि शिवपाल यादव ने खुल करके बैटिंग की थी कि समाजवादी पार्टी कुछ चोर-उचक्कों की पार्टी हो गई है। सारा माफियाओं की पार्टी हो गई है। इसमें गरीबों की जमीन कब्जा करने वाले लोग आ गए हैं, समाजवादी पार्टी नहीं चलेगी। ऐसा बयान शिवपाल जी ने जब प्रगतिशील समाजवादी पार्टी बनाई थी तो खूब चलाते थे, बयान देते थे। बता दें साल 27 के चुनाव से पहले इस बदलाव को सपा में अहम बदलाव से जोड़कर देखा जा रहा है। अखिलेश अब इस ट्रस्ट के अलावा जनेश्वर मिश्रा ट्रस्ट के भी अध्यक्ष हैं। दोनों ही ट्रस्ट, सपा का ही हिस्सा हैं।

राजभर ने कहा कि अखिलेश यादव को शिवपाल यादव पर विश्वास नहीं है क्योंकि अखिलेश यादव का साथ छोड़ करके कुछ दिन वो बीजेपी के साथ रहे हैं। कुछ दिन खुद राष्ट्रीय अध्यक्ष बनकर प्रगतिशील समाजवादी पार्टी बना करके अखिलेश यादव के और समाजवादी पार्टी की नीतियों को उजागर किए हैं। इसलिए अखिलेश यादव कैसे विश्वास करें?

राजस्थान निकाय चुनाव में भाजपा की बढ़त एक प्रतिशत से भी कम: डोटासरा

राजस्थान कांग्रेस प्रमुख ने भजन सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने दावा किया कि शहरी निकाय चुनाव के परिणामों ने भाजपा सरकार के 'खराब प्रदर्शन' को प्रतिबिंबित किया है। उन्होंने दावा किया कि सत्तारूढ़ दल की कांग्रेस पर मत प्रतिशत की बढ़त एक प्रतिशत से भी कम रही है।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में डोटासरा ने कहा कि शहरी निकाय चुनाव में परंपरागत रूप से भाजपा को बढ़त मिलती रही है, खासकर सत्ता में रहने के दौरान, लेकिन इस बार के परिणामों से स्पष्ट है कि पार्टी यह बढ़त कायम नहीं रख सकी। उन्होंने दावा किया कि वसुंधरा राजे सरकार के दौरान 14-16 के निकाय चुनाव में भाजपा को कांग्रेस पर 8.12 प्रतिशत मतों की बढ़त मिली थी, जबकि अशोक गहलोत सरकार के दौरान 19-21 के चुनाव में कांग्रेस भाजपा से 2.2 प्रतिशत मतों से आगे रही थी। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में भाजपा की कांग्रेस पर बढ़त एक प्रतिशत से भी कम है। डोटासरा ने आरोप लगाया कि वार्ड परिसीमन में अनियमितताओं से भाजपा को लाभ हुआ। उन्होंने दावा किया कि यदि 'अनुचित' परिसीमन को अलग रखकर परिणामों का आकलन किया जाए तो कांग्रेस भाजपा से करीब 1,500 अधिक वार्ड जीतती। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव के दौरान भाजपा सरकार ने प्रशासनिक मशीनरी का इस्तेमाल किया और कुछ वार्ड में जहां कांग्रेस प्रत्याशी आगे थे, वहां जानबूझकर परिणाम घोषित करने में देरी की गई। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा सभी 10 नगर निगमों में रोड शो सहित व्यापक प्रचार किए जाने के बावजूद भाजपा कई नगर निगमों में बहुमत हासिल नहीं कर सकी।

डोटासरा ने कहा कि कांग्रेस कथित अनियमितताओं का मुद्दा संबंधित अधिकारियों के समक्ष उठाएगी। उन्होंने दावा किया कि आगामी पंचायत चुनावों में भी भाजपा को इसी तरह का झटका लगेगा। डोटासरा ने दावा किया कि कांग्रेस ने अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित 542 वार्ड जीते, जबकि भाजपा को 350 वार्ड मिले। अनुसूचित जाति महिला के लिए आरक्षित कुल वार्ड में कांग्रेस ने 261 और भाजपा ने 186 पर जीत दर्ज की। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जनजाति महिला के लिए आरक्षित वार्ड में कांग्रेस ने 53 और भाजपा ने 39 सीटें जीतीं।

80 प्रतिशत ड्रग्स बीजेपी शासित राज्यों से आ रही पंजाब: केजरीवाल

» पंजाब में नशे की तस्करी को लेकर आई रिपोर्ट में दावे के बाद आप की प्रतिक्रिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब में ड्रग्स के खिलाफ जारी कार्रवाई के बीच एक रिपोर्ट में ड्रग तस्करी के पैटर्न में बड़े शिफ्ट का दावा किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, सीमा पार से होने वाली तस्करी पर काफी हद तक रोक लगी है, लेकिन इसकी जगह अंतरराज्यीय ड्रग्स की तस्करी ले रहा है, इस पर अब राजनीतिक बहस शुरू होते दिखाई दे रही है। इस मुद्दे पर अब आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बीजेपी सरकार पर निशाना साधा है।

आप नेता अरविंद केजरीवाल ने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर ट्वीट कर लिखा कि आप सरकार बनने के बाद पाकिस्तान से आने वाले ड्रग्स तस्करी पर 80 प्रतिशत रोक लगी है, लेकिन अब देश के ही राज्यों से पंजाब में तस्करी के मामले में बढ़तरी हुई है। हालांकि, रिपोर्ट के आंकड़ों को लेकर कोई आधिकारिक पुष्टी या सत्यापित स्रोत सामने नहीं आया है। अरविंद केजरीवाल ने अपनी पोस्ट में लिखा, 22 में जब हमारी सरकार बनी थी तो 80 प्रतिशत ड्रग्स पाकिस्तान से आती थी। आप सरकार ने एंटी ड्रोन सिस्टम लगाकर पाकिस्तान से आने वाली ड्रग्स पर काबू किया। आज केवल 20 प्रतिशत ड्रग्स पाकिस्तान से आती हैं।

आज 80 प्रतिशत ड्रग्स बीजेपी शासित राज्यों से आ रही हैं - गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, यूपी, दिल्ली। बीजेपी अपने राज्यों में नशे का धंधा रोकने में नाकाम रही है या रोकना नहीं चाहती? केजरीवाल द्वारा शेयर किए गए इस रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पंजाब की सड़कों पर हेरोइन की उपलब्धता में भारी कमी आई है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि एंटी ड्रोन सिस्टम के जरिए सीमा पार से होने वाली सप्लाई चेन बाधित हुई है।

पुलिस ने सीमा पार निगरानी को बढ़ाया है, लेकिन अब ड्रग सप्लाई के पैटर्न में बड़ा शिफ्ट देखने को मिला है। पुलिस के अनुसार, पंजाब पहुंचने वाली लगभग 80 प्रतिशत फार्मास्युटिकल दवाए अब गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली से आती हैं 25 से अब तक 11.54 लाख टैबलेट और कैप्सूल ज़ब्त किए जा चुके हैं जो साबित करते हैं कि सप्लाई रूट में बदलाव आया ह।

चक्रव्यूह की रचना में जुटी सपा

अखिलेश के रणनीति से विपक्ष हलकान

» सीजेपी से लेकर कांग्रेस तक जुड़ने को बेताब

» भाजपा ने सपा के खिलाफ खोला मोर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों से पहले राज्य के सियासी गलियारों में हलचल पैदा करने वाली कई बड़ी घटनाएं सामने आने लगी हैं, कभी पश्चिमी यूपी में रालोद व सपा के बीच रार की खबरें चर्चा में रहती हैं तो कभी सबसे नये नवेले सियासी दल सीजेपी व सपा की मुलाकात के बाद कयासों के दौर शुरू हो लगे हैं। वहीं कांग्रेस नेता इमरान मसूद सपा से जल्द से जल्द से गठबंधन की बात में तेजी लाने की को कह रहे हैं।

उधर भाजपा सपा को हर मंच से घेरने में जुटी है। इसकी कमान खुद सीएम योगी ने संभाल ली है। इस बीच समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने लखनऊ में कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के राष्ट्रीय प्रवक्ता आशुतोष रांका के साथ 90 मिनट तक बंद कमरे में मैराथन बैठक की। यह हाई-प्रोफाइल बैठक समाजवादी पार्टी मुख्यालय के समीप स्थित जनेश्वर मिश्र ट्रस्ट के दफ्तर में हुई। इस मुलाकात के दौरान रांका के साथ पार्टी के सात सहयोगियों का एक प्रतिनिधिमंडल भी मौजूद था। लगभग डेढ़ घंटे तक चली इस लंबी बातचीत के बाद हालांकि दोनों में से किसी भी दल ने कोई आधिकारिक संयुक्त बयान जारी नहीं किया और नेताओं ने बाहर निकलते समय मीडिया से दूरी बनाए रखी। फिर भी, राज्य की एक स्थापित क्षेत्रीय दिग्गज पार्टी और युवाओं के नेतृत्व वाले उभरते राजनीतिक आंदोलन के बीच हुई इस अचानक मुलाकात के कूटनीतिक और सियासी मायनों पर राज्यभर में जबरदस्त चर्चा शुरू हो गई है।

समाजवादी पार्टी के मुख्य प्रवक्ता ने की बैठक की पुष्टि

बैठक की पुष्टि करते हुए समाजवादी पार्टी के मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने बताया कि

बातचीत लखनऊ में आयोजित हुई थी। उन्होंने संकेत दिया कि अखिलेश यादव लगातार युवाओं की शिकायतों और सरकारी शिक्षा की बदहाली पर राज्य सरकार को घेरते रहे हैं, इसलिए यह संवाद बेहद स्वाभाविक था। वहीं, पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि अखिलेश यादव ने CJP प्रतिनिधिमंडल को स्पष्ट आश्वासन दिया है कि समाजवादी पार्टी छात्रों और युवाओं के अधिकारों की लड़ाई में उनके साथ मजबूती से खड़ी है।

सपा प्रमुख का दांव : जयंत चौधरी की रैली से पहले घेरा

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का सहारनपुर जिले में दौरा महज पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से मुलाकात तक सीमित नहीं रहा। रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी की तीन सितंबर को रामपुर मनिहारान में प्रस्तावित स्वाभिमान रैली से ठीक एक दिन पहले सपा अध्यक्ष का सहारनपुर पहुंचना पश्चिमी यूपी की सियासत में कई संदेश छोड़ गया। अखिलेश ने संगठन की नब्ज टटोलने के साथ हिंदू-मुस्लिम सामाजिक समीकरण साधने की कोशिश की। 27 की बिसात पर जिले में अखिलेश की यह पहली चाल मानी जा रही है। अखिलेश यादव पहले सपा के राष्ट्रीय महासचिव चौधरी रुद्रसैन और चौधरी इंद्रसैन के आवास पर पहुंचे। इससे पहले उन्होंने स्टेट बैंक कॉलोनी स्थित सिद्धि विनायक मंदिर में पूजा की। इसके बाद उन्होंने पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और विधानसभा चुनाव को लेकर उत्साह भरा। इसके बाद वह पूर्व सांसद हाजी फजलुर्रहमान के आवास पर पहुंचे। दोनों स्थानों पर कार्यकर्ताओं से मुलाकात का राजनीतिक संदेश साफ था कि सपा चुनाव से पहले संगठन को सक्रिय करने के साथ अपने सामाजिक आधार को भी मजबूत करना चाहती है। चौधरी रुद्रसैन के आवास पर पहुंचकर अखिलेश ने हिंदू, किसान और पिछड़े वर्गों से जुड़े सामाजिक समीकरण को साधने का संकेत दिया, वहीं हाजी फजलुर्रहमान के घर पहुंचकर मुस्लिम मतदाताओं के बीच अपने आधार को मजबूत रखने का संदेश दिया। सपा के लिए पश्चिमी यूपी में यही व्यापक सामाजिक गठजोड़ चुनावी रणनीति का अहम हिस्सा है। दौरे का एक बड़ा पहलू विधानसभा टिकट भी है। 27 का चुनाव करीब आते ही सहारनपुर की सातों विधानसभा सीटों पर सपा में टिकट के दावेदार सक्रिय हैं। अखिलेश का कार्यकर्ताओं और प्रमुख नेताओं के घर पहुंचना संभावित प्रत्याशियों के लिए भी शक्ति प्रदर्शन का मौका बना।

सीजेपी व सपा में युवा, शिक्षा और बेरोजगारी पर मंथन

सूत्रों के मुताबिक लिखा कि बंद कमरे में हुई इस चर्चा का मुख्य एजेंडा युवाओं, छात्रों और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों से जुड़े गंभीर मुद्दों पर केंद्रित था। बैठक में निम्नलिखित प्रमुख विषयों पर गहन

विचार-विमर्श किया गया। पेपर लीक और परीक्षा पारदर्शिता- राष्ट्रीय स्तर पर NEET और राज्य की प्रतियोगी भर्ती परीक्षाओं में लगातार हो रहे पेपर लीक की समस्या। शिक्षा का गिरता ढांचा प्रदेश के सरकारी प्राथमिक स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी और बंद होते विद्यालयों का मुद्दा। बेरोजगारी और महंगी शिक्षा- युवाओं के सामने बढ़ती बेरोजगारी, भर्ती प्रक्रियाओं में देरी और निजी शिक्षा की अत्यधिक लागत।

सरकार बनने पर 24 घंटे के भीतर करेंगे गन्ने का भुगतान

पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि सहारनपुर और आसपास के जनपद गन्ने का क्षेत्र है। पार्टी ने तय किया है कि सरकार बनने के बाद किसानों के गन्ने का भुगतान 24 घंटे में किया जाएगा उसे 48 घंटे भी नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह गन्ने के साथ ही एथनॉल का भी इलाका है। कोई

व्हीकल कंपनी एथनॉल के इस्तेमाल से गाड़ी के मेंटेनेंस और माइलेज की गारंटी नहीं दे रही है। चीनी महंगी हुई है। यदि महंगाई का मुनाफा किसान को मिले तो वह खुशहाल होगा। सहारनपुर में जो कारोबार बंद हो गए हैं, साथ ही अमेरिकी पाबंदियों से जो कारोबार और खेती प्रभावित हुई है उसे सुधारा जाएगा। कहा कि इस बार सरकार बनाने में सहारनपुर का बड़ा योगदान रहेगा। उन्होंने कहा कि पीडीए भाजपा का मुकाबला कर रहा है। इसीलिए भाजपा को जिताने वालों के पेट में दर्द हो रहा है। बता दें, कि 2022 के चुनाव में धर्म सिंह सैनी सपा के टिकट पर मैदान में थे।

दोनों पार्टियों के बीच बढ़ती नजदीकियां

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह बैठक कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि पिछले कुछ हफ्तों से दोनों संगठनों के बीच निर्मित हो रहे रणनीतिक समन्वय का परिणाम है। सीजेपी का नेतृत्व आशुतोष रांका जैसे युवा पेशेवर कर रहे हैं, जो कानपुर और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के पूर्व छात्र हैं. उन्होंने युवाओं और छात्रों के आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए मैकिन्से जैसी प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय कॉर्पोरेट कंसल्टिंग फर्म की नौकरी छोड़ दी थी। (नई पीढ़ी के युवाओं) और शिक्षित कार्यकर्ताओं के बीच व्यापक समर्थन मिल रहा है। इससे पहले, जब नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर राष्ट्रीय परीक्षाओं में धांधली के खिलाफ सीजेपी का 36 दिनों तक लंबा विरोध प्रदर्शन चला था, तब एसपी सांसद डिंपल यादव और आजमगढ़ के सांसद धर्मेंद्र यादव ने खुद धरना स्थल पर पहुंचकर अपना समर्थन जताया था. इसके अतिरिक्त, जब राजस्थान में सीजेपी के स्कूल ठीक करो अभियान के दौरान रांका पर हमला हुआ था, तब अखिलेश यादव ने खुलकर उस घटना की निंदा की थी और छात्रों की सुरक्षा व प्रशासनिक जवाबदेही पर सवाल उठाए थे।

इस मुलाकात के राजनीतिक मायने

जेन-जेड और युवा वोट बैंक का एकीकरण पूर्व पेशेवरों द्वारा संचालित मंच से हाथ मिलाकर अखिलेश यादव का लक्ष्य पहली बार मतदान करने वाले युवाओं, छात्रों और शहरी मध्यम वर्ग के Gen-Z वोट बैंक को सीधे आकर्षित करना है। स्कूल ठीक करो अभियान और एसपी द्वारा प्राथमिक शिक्षा की बदहाली का विरोध आपस में मिलते हैं। यह गठबंधन सत्तारूढ़ बीजेपी के खिलाफ एक मजबूत मुद्दा-आधारित माहौल तैयार कर सकता है। अपनी मूल पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) रणनीति के साथ-साथ नागरिक आंदोलनों से जुड़कर एसपी शिक्षित, नागरिक-केंद्रित और गैर-पारंपरिक मतदाता वर्ग तक अपनी पहुंच बढ़ा रही है। हालिया हमलों के बाद सीजेपी को अखिलेश यादव का समर्थन मिलने से एक तरफ जहां इस युवा आंदोलन को सुरक्षा और मुख्यधारा की राजनीतिक पहचान मिलती है, वहीं एसपी को जमीनी स्तर पर सक्रिय कार्यकर्ताओं का नेटवर्क प्राप्त होता है। 90 मिनट की यह बैठक औपचारिक चुनाव पूर्व समझौतों से पहले अनौपचारिक समन्वय, संयुक्त आंदोलनों और भावी सीट-बंटवारे की संभावनाओं को परखने का एक परीक्षण मंच है।

सरकार पर चौतरफा दबाव बनाने की रणनीति

छात्र संगठनों की ऊर्जा और समाजवादी पार्टी के विशाल कैडर व नेटवर्क का मेल लखनऊ से लेकर नई दिल्ली तक सरकार के खिलाफ बड़े जन-आंदोलन खड़े करने की क्षमता रखता है। प्रतियोगी परीक्षाओं में धांधली और बेरोजगारी को आगामी चुनाव का सबसे केंद्रीय मुद्दा बनाने के लिए दोनों दल एक साझा रणनीति पर काम कर रहे है। हालांकि दोनों दलों ने अभी तक किसी औपचारिक चुनावी या चुनावी सीट-शेयरिंग समझौते का ऐलान नहीं किया है, लेकिन ऐसा माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में सरकारी स्कूलों की स्थिति और रोजगार के अवसरों पर संयुक्त विरोध प्रदर्शन, साझा रैलियां और समन्वित अभियान शुरू किए जा सकते हैं। उत्तर प्रदेश के इस आगामी राजनीतिक समर में यह मुलाकात स्पष्ट संकेत देती है कि पारंपरिक जातीय समीकरणों के साथ-साथ इस बार शिक्षा में सुधार, छात्र अधिकार और बेरोजगारी जैसे ज्वलंत मुद्दे चुनावी लड़ाई के सबसे बड़े केंद्र बिंदु बनने जा रहे हैं।

दावेदारों ने शहर को होर्डिंग्स और पोस्टरों से पाटा

दावेदारों ने शहर को होर्डिंग्स और पोस्टरों से पाट दिया। वहीं, जयंत चौधरी की रैली ने टिकट और सीटों के समीकरण को और दिलचस्प बना दिया है। रामपुर मनिहारान में रालोद का शक्ति प्रदर्शन इस बात का संकेत देगा कि पार्टी पश्चिमी यूपी में किन सीटों पर अपनी राजनीतिक दावेदारी मजबूत करना चाहती है। ऐसे में सपा के लिए चुनौती केवल भाजपा से मुकाबले की नहीं, बल्कि सहयोगी दलों के साथ सीटों के संभावित बंटवारे में अपनी मजबूत स्थिति बनाए रखने की भी होगी। यही वजह है कि जयंत की रैली से पहले अखिलेश का सहारनपुर दौरा राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने वर्ष 2022 में हुए विधानसभा चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए कहा कि यदि उस समय बेमानी न होती तो नकुड़ से चुनाव लड़े धर्म सिंह सैनी विधायक होते। इसी तरह अन्य जनपदों में भी सपा प्रत्याशी हरा दिए गए। वह पूर्व सांसद हाजी फजलुर्रहमान के निवास पर बातचीत कर रहे थे। उन्होंने 27 के चुनाव में अपनी पार्टी की रणनीति और एजेंडे के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि जो लोग समाजवादी पार्टी में आएंगे उन्हें सरकार बनने पर पूरा सम्मान दिया जाएगा। यदि वह चुनाव जीत सकते हैं तो उस पर भी पार्टी विचार करेगी कि उन्हें चुनाव लड़ाया जाए। कहा कि यदि उनकी पार्टी की सरकार बनती है तो युवाओं की शिक्षा और रोजगार पर काम करेगी। बिजली सस्ती करेंगे और महंगाई पर अंकुश लगाने का काम करेंगे।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

सड़कों के गड्ढों से कब मिलेगी मुक्ति

“ सरकार टैक्स तो लेती है पर सुविधा पर उतना ध्यान नहीं देती है। बुनियादी ढांचा आला दर्जे का हो इसके लिए ही राष्ट्रीय व राज्य राजमार्गों पर टोल वसूली की जाती है। टोल वसूली की तकनीक भले ही बदल गई हो लेकिन सड़क निर्माण के ढीले दौर में बदलाव नहीं आया है।

हल्की सी बारिश के बाद बड़ी नाम वाली सड़कों का हाल बेहाल हो गए हैं यूपी में जहां एक्सप्रेसवे को लेकर बड़ी-बड़ी होती है वहां कानपुर-लखनऊ एक्सप्रेसवे व गंगा एक्सप्रेसवे हो या अभी उद्घाटन के लिए तैयार रामगमन पथ सब टूटने लगी हैं। इसके अलावा बारिश के बाद क्या शहर क्या गांव सब जगह की सड़के बदहाल है। ये उधड़ी सड़के सिर्फ बारिश की मार से नहीं बिगड़ीं हैं'ये भ्रष्टाचार का शिकार बनीं है। हालांकि सरकार कह रही है कि बारिश के बाद सब ठीक कर दिया जाएगा। पर यहां सबसे बड़ी बात कब तक ऐसे चलेगा । सरकार टैक्स तो लेती है पर सुविधा पर उतना ध्यान नहीं देती है। बुनियादी ढांचा आला दर्जे का हो इसके लिए ही राष्ट्रीय व राज्य राजमार्गों पर टोल वसूली की जाती है। टोल वसूली की तकनीक भले ही बदल गई हो लेकिन सड़क निर्माण के ढीले दौर में बदलाव नहीं आया है। टोल चुकाने के बावजूद सड़कें क्षतिग्रस्त या आधी-अधूरी सड़कें देशभर के दूसरी सड़कों की तरह राजस्थान में भी चिंता पैदा करती है। जयपुर को देश की राजधानी से जोड़ने वाले नेशनल हाइवे-48 पर ही आधा दर्जन स्थानों पर निर्माण से जुड़े अवरोध वाहनों की आवाजाही में समस्याएं पैदा करने वाले हैं।

कहीं अधूरे फ्लाइओवर के कारण तो कहीं सर्विस लेन से डायवर्जन तो कहीं ठेकदारों की सुस्ती इस संकट को बढ़ाने वाली है। हैरत की बात यह है कि इस हाईवे पर ज्यादातर काम में देरी हो रही है। ये काम पूरा करने की तय समयावधि तो कब के ही पार कर चुके हैं। नेशनल हाइवे हो या फिर स्टेट हाईवे, चमचमाती सड़कें और जगह-जगह फ्लाई ओवर देखकर निश्चित ही विकास की दौड़ में कहीं आगे होने पर गर्व की अनुभूति होती है। लेकिन जब चमचमाती सड़कों को बनाने वाली कंपनियां टोल वसूली की रकम से मालामाल होती जाएं और इन सड़कों पर जगह-जगह अवरोध हादसों की वजह बन जाएं तो लोगों में गुस्सा होना स्वाभाविक है। आधी-अधूरी व खस्ताहाल सड़कें न केवल दुर्घटनाओं का सबब बनती जा रहीं है, बल्कि वाहनों के कलपुर्जों को भी नुकसान पहुंचा रही हैं। पेट्रोल-डीजल के बढ़ते दाम के बीच वाहन चालकों को यातायात जाम की वजह से ईंधन फूंकना पड़ता है सो अलग। ये सड़कें बेहतर हों तो समय व धन दोनों की बचत भी होती है लेकिन तय अवधि में फ्लाइओवर निर्माण नहीं होना या फिर निर्माण की शुरुआत ही नहीं होना घोर लापरवाही दर्शाता है। जब तक सड़कें पूरी तरह सुगम न हों, टोल वसूली में भी रियायत दी जानी चाहिए। सड़कों के समय पर निर्माण की व्यवस्था तो हो ही, देरी के लिए जिम्मेदारों पर भी सख्ती बरतना आवश्यक है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

करेंसी को टिकाऊ बनाने की दिशा में अहम बदलाव

प्रो. पूर्णेंदु रंजन

भारत की मुद्रा केवल कागज, सुरक्षा धागे और स्याही का भौतिक उत्पाद नहीं है; यह देश की संप्रभुता का प्रतीक, रोजमर्रा के सामाजिक भरोसे का ठोस माध्यम और राज्य की संस्थागत क्षमता का प्रतीक है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा छोटे मूल्यवर्ग,खासकर 10 रुपये और 20 रुपये, में पॉलिमर यानी प्लास्टिक नोटों के बड़े पैमाने पर फील्ड ट्रायल की दिशा में उठाए गए हालिया नीतिगत क़दम देश की मौद्रिक यात्रा में दूरगामी मोड़ हैं। यह पहल नोटों के टिकाऊपन, मुद्रण लागत में कटौती व जालसाजी पर अंकुश का वादा तो करती है, लेकिन साथ ही पर्यावरण संतुलन, सामाजिक समावेशिता और करेंसी सुधार की राजनीति पर भी गंभीर विमर्श की मांग करती है। वैश्विक पटल पर पॉलिमर बैंकनोट्स कोई सर्वथा नया प्रयोग नहीं है। वर्ष 1988 में ऑस्ट्रेलिया से शुरू होकर ब्रिटेन, कनाडा, वियतनाम और नाइजीरिया जैसे देशों ने इसे सफलतापूर्वक अपनाया है।

इन देशों में पॉलिमर करेंसी को अपनाने का मुख्य कारण उसका लंबा जीवनकाल और उन्नत सुरक्षा तंत्र रहा है। पारंपरिक कागजी नोटों की तुलना में पॉलिमर नोट औसतन तीन से चार गुना अधिक चलते हैं। भारत में छोटे मूल्यवर्ग के नोटों की स्थिति जमीनी स्तर पर अत्यंत दयनीय रहती है। सब्जी मंडी, ऑटो-रिक्शा, चाय की थड़ियों और स्थानीय हाट-बाज़ारों में 10 और 20 रुपए के नोट इतनी तेजी से हाथ बदलते हैं कि उनका औसत जीवनकाल बमुश्किल एक वर्ष ही रह जाता है। पसीने, नमी, धूल और बार-बार मोड़ने-मरोड़ने के कारण वे जल्द ही फट जाते हैं। रिजर्व बैंक की 'क्लीन नोट पॉलिसी' के तहत प्रतिवर्ष अरबों की संख्या में कटे-फटे और मैले नोट नष्ट कर उनकी जगह नोट छापने पड़ते हैं। इस प्रक्रिया में भारी वित्तीय संसाधन, विदेशी सबस्ट्रेट यानी नोट-पेपर का आयात और लॉजिस्टिक्स का खर्च शामिल होता है। पॉलिमर नोट पानी, तेल और गंदगी के प्रति प्रतिरोधी होते हैं। इन्हें बार-बार बदलने की दर घटने से केंद्रीय बैंक के मुद्रण खर्च में बड़ी कमी आएगी।

इसके साथ ही, पारदर्शी विंडो और जटिल ऑप्टिकल सुरक्षा विशेषताओं के चलते नकली नोटों के संगठित नेटवर्क पर प्रभावी अंकुश लगाना कहीं अधिक संभव हो सकेगा। पॉलिमर नोटों का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव भारत की विशाल अनौपचारिक इकोनॉमी पर पड़ेगा। रेहड़ी-पटरी वाले, छोटे दुकानदार, दिहाड़ी मजदूर और ग्रामीण परिवार रोजमर्रा के लेन-देन के लिए मुख्य रूप से नकदी पर ही निर्भर हैं। जब किसी

आम नागरिक के हाथ में फटा हुआ नोट आता है और बाजार में उसे लेने से मना कर दिया जाता है, तो यह सिर्फ आर्थिक हानि नहीं बल्कि रोजमर्रा की असुविधा और गरिमा पर चोट का कारण बनता है। लंबे समय साफ-साबुत रहने वाले नोट आम जनता को लेन-देन में सुगमता और मानसिक सुरक्षा प्रदान करेंगे। यह नीतिगत कदम इस व्यावहारिक सच्चाई को भी स्वीकार करता है कि यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) और सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी के अभूतपूर्व प्रसार के बावजूद भारत में नकद लेन-देन पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकता। डिजिटल भुगतान की बुनियादी सीमाएं हैं नेटवर्क कनेक्टिविटी, स्मार्टफोन की उपलब्धता और डिजिटल साक्षरता की बाधाएं अभी पूरी तरह दूर नहीं हुईं। प्रस्तावित पॉलिमर नोट कागज़ी मुद्रा के समांतर चलेंगे, जिससे सुनिश्चित होगा कि तकनीकी रूप से वंचित वर्ग वित्तीय प्रणाली के हाशिए पर न छूटे। हालांकि, पॉलिमर नोटों की चमक के पीछे दो प्रमुख चुनौतियां भी छिपी हैं पहली पर्यावरणीय और दूसरी सांस्कृतिक व जलवायुगत। पॉलिमर नोट प्लास्टिक आधारित होने के कारण गैर-बायोडिग्रेडेबल हैं। भारत में प्लास्टिक कचरा प्रबंधन और रीसाइक्लिंग का ढांचा अभी भी पूरी तरह संगठित नहीं। ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे देशों ने पुराने पॉलिमर नोटों को रिसाइकिल कर उनसे उपयोगी औद्योगिक उत्पाद बनाने की व्यवस्था तैयार की है। यदि भारत समय रहते मुद्रण के साथ-साथ ऐसे नोटों के वैज्ञानिक संकलन और रिसाइक्लिंग का तंत्र विकसित नहीं करता, तो वित्तीय बचत से अधिक बड़ा नुकसान पर्यावरणीय लागत के रूप में सामने आ सकता है। भीषण गर्मी, अत्यधिक नमी और धूल भरे माहौल में पॉलिमर नोटों के व्यवहार का जमीनी आकलन अनिवार्य है।

इसके साथ ही, भारतीय संदर्भ में नोटों के सबस्ट्रेट को सांस्कृतिक और सामाजिक संवेदनाओं के अनुकूल रखना भी आवश्यक शर्त रही है। आम बोलचाल में 'प्लास्टिक' शब्द कई बार कृत्रिमता और अविश्वास से जुड़ जाता है ऐसे में जनमानस में इन नोटों की प्रामाणिकता और वैधता स्थापित करने के लिए जन-जागरूकता जरूरी होगी। पॉलिमर नोट महज एक तकनीकी या प्रशासनिक सुधार नहीं वे पारंपरिक कागजी मुद्रा और भविष्य की पूर्णत: डिजिटल अर्थव्यवस्था के बीच एक संक्रमणकालीन सेतु की तरह हैं। वे नकद के आधुनिकीकरण का माध्यम हैं।

युवाओं को परिवर्तनकारी शक्ति मानते थे विवेकानंद

योगेश कुमार गोयल

इतिहास में कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जो केवल इतिहास नहीं बनते, बल्कि इतिहास की दिशा ही बदल देते हैं। 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म महासभा में स्वामी विवेकानंद का संबोधन ऐसा ही एक कालजयी क्षण था। आज 133 वर्ष बाद भी उस आवाज़ की गूंज इसलिए सुनाई देती है, क्योंकि वह किसी एक धर्म, देश या काल की आवाज़ नहीं थी, बल्कि समूची मानवता के लिए एकता, सहिष्णुता, आत्मविश्वास और आध्यात्मिक उदात्तता का उद्घोष थी। जब युवा संन्यासी ने अपने संबोधन की शुरुआत 'मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों' कहकर की, तो सभागार में देर तक गूंजती तालियों ने स्पष्ट कर दिया कि आत्मीयता की भाषा किसी अनुवाद की मोहताज नहीं होती। उस क्षण भारत अपनी हजारों वर्ष पुरानी सांस्कृतिक चेतना के साथ विश्व के सामने उपस्थित था। विवेकानंद का शिकागो भाषण इसलिए असाधारण न हीं था कि उन्होंने हिंदू धर्म की श्रेष्ठता का दावा किया, बल्कि इसलिए कि उन्होंने धर्म को संकीर्ण पहचान की दीवारों से बाहर निकालकर मानव-कल्याण और सार्वभौमिक बंधुत्व के धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने भारत की उस आध्यात्मिक परंपरा को सामने रखा, जो विविधता को संघर्ष नहीं, सह-अस्तित्व का आधार मानती है। उनका संदेश स्पष्ट था कि मनुष्य की अंतिम मंजिल सत्य, करुणा और आत्मबोध ही है। आज जब दुनिया धार्मिक कट्टरता, युद्ध, असहिष्णुता और पहचान के संघर्षों से जूझ रही है, तब विवेकानंद का यह दृष्टिकोण और भी प्रासंगिक हो उठता है। 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में नरेंद्रनाथ दत्त के रूप में जन्मे विवेकानंद का जीवन असाधारण जिज्ञासा, संघर्ष और आत्मान्वेषण की यात्रा था। श्रीरामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य ने उनकी चेतना को नई दिशा दी और आगे चलकर यही नरेंद्रनाथ विश्व के लिए स्वामी विवेकानंद बन गए।

उन्होंने भारत को केवल उसके अतीत के गौरव में नहीं देखा, बल्कि उसके भविष्य की संभावनाओं को भी पहचाना। वे जानते थे कि जिस देश की आत्मा जागृत हो जाए, उसे लंबे समय तक पराधीन नहीं रखा जा सकता। इसलिए उनका सबसे बड़ा आह्वान था भारतीयों, विशेषकर युवाओं को अपनी अंतर्निहित शक्ति का बोध कराना। विवेकानंद के लिए युवा राष्ट्र की सबसे बड़ी परिवर्तनकारी शक्ति था। वे चाहते थे कि युवा भय, हीनभावना और निष्क्रियता से बाहर आएं। उनका विश्वास था कि मनुष्य की सबसे बड़ी पराजय बाहरी परिस्थितियों से नहीं, स्वयं पर अविश्वास से होती है। इसलिए उन्होंने आत्मबल को राष्ट्र निर्माण की पहली शर्त माना। उनका प्रसिद्ध आह्वान 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए' आज भी केवल प्रेरक वाक्य नहीं, बल्कि कर्म और संकल्प का घोष है। उनकी दृष्टि में शिक्षा का अर्थ केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं था। शिक्षा वह शक्ति है, जो व्यक्ति में चरित्र, विवेक, आत्मविश्वास और जिम्मेदारी पैदा करे। वे ऐसे मनुष्य का निर्माण चाहते थे, जो अपने पैरों पर खड़ा हो सके, कठिन परिस्थितियों का सामना कर सके और दूसरों के जीवन में भी प्रकाश ला सके। विवेकानंद के लिए राष्ट्र निर्माण का अर्थ था गरीब, वंचित और कमजोर व्यक्ति को सम्मानजनक जीवन देना, शिक्षा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना और युवाओं में सेवा तथा त्याग की भावना पैदा करना।

विवेकानंद के चिंतन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष था आध्यात्मिकता और सेवा का समन्वय। वे उस आध्यात्मिकता के समर्थक नहीं थे, जो मनुष्य को समाज से काट दे। उनके लिए दरिद्र, पीड़ित और वंचित मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना थी। यही विचार आगे चलकर रामकृष्ण मिशन की सेवा-परंपरा का आधार बना। 1 मई, 1897 को स्थापित रामकृष्ण मिशन ने शिक्षा, चिकित्सा, राहत और सामाजिक सेवा के माध्यम से उनके विचारों को व्यवहार में उतारा। 9 दिसंबर, 1898 को बेलूर मठ की स्थापना ने इस आध्यात्मिक-सामाजिक आंदोलन को स्थायी केंद्र प्रदान किया। शिकागो के मंच पर विवेकानंद ने भारत को विश्व को देने वाली जीवंत संस्कृति के रूप में प्रस्तुत किया। उनके भाषण ने पश्चिमी दुनिया का ध्यान भारतीय दर्शन, वेदांत, योग और आध्यात्मिक चिंतन की ओर आकर्षित किया। इससे भी महत्वपूर्ण यह था कि उन्होंने भारतवासियों के भीतर आत्मगौरव जगाया।

औपनिवेशिक शासन के दौर में जब भारतीय समाज के एक बड़े हिस्से में हीनभावना गहरी थी, तब विदेश की धरती से एक भारतीय संन्यासी की निर्भीक आवाज़ ने बताया कि भारत के पास विश्व को देने के लिए बहुत कुछ है। आज का भारत आर्थिक विकास, विज्ञान, तकनीक, स्टार्टअप, अंतरिक्ष और डिजिटल परिवर्तन के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां छू रहा है, लेकिन किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति आर्थिक समृद्धि के बजाय उसके चरित्र, सामाजिक संवेदना, नैतिकता और नागरिक चेतना में निहित है। यही वह क्षेत्र है, जहां विवेकानंद आज भी हमारे सामने एक आईना रखते हैं। आज के प्रतिस्पर्धी और तनावपूर्ण वातावरण में विवेकानंद का संदेश युवाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे सफलता से पहले चरित्र की बात करते हैं, अधिकार से पहले कर्तव्य की, आत्मविश्वास के साथ आत्मानुशासन की और व्यक्तिगत उपलब्धि के साथ सामाजिक जिम्मेदारी की। उनका संदेश यह नहीं कि कठिनाइयां समाप्त हो जाएंगी, बल्कि यह है कि मनुष्य को इतना शक्तिशाली बनना चाहिए कि वह कठिनाइयों के सामने झुकने के बजाय उनसे संघर्ष करना सीखे।

खूबसूरत बनाने के और टिप्स

हेयरस्टाइल बनाने से पहले बालों को अच्छी तरह सुलझाएं। हल्का हेयर सीरम लगाने से बाल स्मूद और शाइनी दिखते हैं। हेयरस्टाइल को लंबे समय तक टिकाने के लिए हल्के होल्ड वाला हेयर स्प्रे इस्तेमाल करें। ताजे फूल, गजरा, मोती वाले पिन या मिनिमल हेयर एक्सेसरीज़ लुक को और आकर्षक बनाते हैं। अपने फेस शेप और आउटफिट के अनुसार हेयरस्टाइल चुनें।

ट्विस्टेड लो पोनीटेल

लो पोनीटेल में दोनों तरफ के बालों को हल्का ट्विस्ट देकर पीछे बांधें। इसके बाद मोती वाली हेयर पिन, मेटल क्लिप या मिनिमल एक्सेसरी जोड़ें। यह हेयरस्टाइल उन महिलाओं के लिए उपयुक्त है जो सिंपल लेकिन स्टाइलिश लुक चाहती हैं। इसे ऑफिस फेस्टिव सेलिब्रेशन, फैमिली फंक्शन या पूजा के दौरान भी आसानी से कैरी किया जा सकता है।

साइड ब्रेड

यह एक सदाबहार स्टाइल है जो कैजुअल और फॉर्मल दोनों मौकों के लिए सही है। इसके अलावा अगर आप पारंपरिक लुक में थोड़ा मॉडर्न टच चाहती हैं, तो साइड ब्रेड बेहतरीन विकल्प है। ढीली चोटी बनाकर उसमें छोटे फूल, रिबन या स्टोन पिन लगाएं। यह स्टाइल लंबे बालों पर खासतौर से खूबसूरत लगती है। कुर्ती, अनारकली या लहंगे के साथ आसानी से मैच हो जाती है।

एथनिक लुक के लिए 5 आसान हेयरस्टाइल

क्लासिक लो बन

लो बन एथनिक आउटफिट के साथ सबसे पसंदीदा हेयरस्टाइल में से एक है। इसे साड़ी, सिल्क सूट या लहंगे के साथ आसानी से बनाया जा सकता है। बीच की मांग या साइड पार्टिंग करके बालों का साफ-सुथरा बन बनाएं और चाहें तो गजरा, ताजे फूल या मोती वाले हेयर एक्सेसरीज से सजाएं। यह हेयरस्टाइल चेहरे को सलीकेदार और रॉयल लुक देती है।

हाफ-अप हाफ-डाउन

जिन लोगों को खुले बाल पसंद हैं, उनके लिए हाफ-अप हाफ-डाउन हेयरस्टाइल शानदार विकल्प है। सामने के कुछ बालों को पीछे पिनअप करके बाकी बाल खुले छोड़ दें। हल्के कर्ल या वेव्स जोड़ने से हेयरस्टाइल और भी आकर्षक दिखाई देती है। यह स्टाइल लगभग हर फेस शेप और एथनिक आउटफिट पर जंचती है।

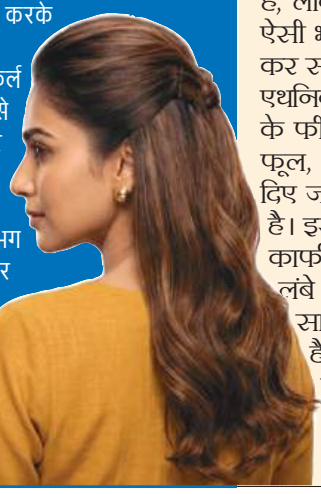

त्योहारों, शादी-ब्याह, पूजा, पारिवारिक समारोह या किसी खास अवसर पर जब भी हम साड़ी, सूट, अनारकली या लहंगा पहनते हैं, तो सबसे बड़ी चिंता होती है कि कौन-सी हेयरस्टाइल पूरे लुक को और भी खूबसूरत बनाएगी। अक्सर लोग सोचते हैं कि आकर्षक हेयरस्टाइल बनाने के लिए पार्लर जाना जरूरी है, लेकिन ऐसा नहीं है। कुछ आसान और ट्रेंडी हेयरस्टाइल ऐसी भी हैं जिन्हें आप घर पर केवल 5-10 मिनट में तैयार कर सकती हैं। सही हेयरस्टाइल न केवल आपके एथनिक आउटफिट की खूबसूरती बढ़ाती है, बल्कि चेहरे के फीचर्स को भी उभारती है। यदि इसमें गजरा, छोटे फूल, मोती वाले हेयरपिन या स्टाइलिश एक्सेसरीज़ जोड़ दिए जाएं, तो साधारण लुक भी बेहद एलिगेंट दिखाई देता है। इस समय मिनिमल और नेचुरल हेयरस्टाइल का ट्रेंड काफी लोकप्रिय है। ऐसे हेयरस्टाइल जो आरामदायक हों, लंबे समय तक टिके रहें और हर तरह के आउटफिट के साथ मैच करें, उन्हें सबसे ज्यादा पसंद किया जा रहा है। अगर आप भी इस फेस्टिव सीजन या किसी खास मौके पर बिना ज्यादा मेहनत किए स्टाइलिश दिखना चाहती हैं, तो ये आसान हेयरस्टाइल आपके लिए बेहतरीन विकल्प हो सकती हैं।

सॉफ्ट वेवी ओपन हेयर

यदि आप बिना ज्यादा स्टाइलिंग के खूबसूरत दिखना चाहती हैं, तो बालों में हल्की वेव्स बनाकर खुले रखें। बीच या साइड की मांग निकालें और एक सुंदर हेयर क्लिप, मांग टीका या फूलों की एक्सेसरी लगाएं। यह हेयरस्टाइल खासकर जॉर्जेट, शिफॉन और फ्लोरल एथनिक आउटफिट के साथ बेहद आकर्षक लगती है।

हंसना मना है

लड़की: कितना प्यार करते हो मुझसे?
लड़का: शाहजहां जैसा, लड़की: तो ताजमहल बनवाओ, लड़का: जमीन खरीद ली है, बस तुम्हारे मरने का इंतजार कर रहा हूं।

पप्पु बहूत देर से एक लड़की को घुर रहा था, लड़की : तेरे घर में मां बहन नहीं है क्या? पप्पु : है न तभी तो देख रहा हूं, क्योंकि मां को बहू और बहन को भाभी चाहिए।

दुनिया बुरी हो सकती है तुम नहीं, लोग बुरे हो सकते है तुम नहीं, दुनिया बेवफा हो सकती है तुम नहीं, पागल ठीक हो सकते हैं तुम नहीं।

एक लड़का पार्क में पेड़ के पीछे अपनी गर्लफ्रेंड के साथ खड़ा था, एक बुजुर्ग आदमी उस पेड़ के पास से गुजरा और बोला: बेटे क्या यह हमारी संस्कृति है? लड़का: नहीं अंकल, यह तो मल्होत्रा अंकल की टीना है, आप आगे जाकर दुसरे पेड़ के पीछे चेक कर लीजिए शायद वहां हो।

पप्पू: मेरे बाप के आगे बड़े-बड़े लोग कटोरी लेके खड़े होते हैं, लड़की: अच्छा! कौन है तुम्हारा बाप? पप्पू: पानी पूरीवाला।

कहानी — कबूतर और चींटी

गर्मियों का मौसम था, एक चींटी को बहुत तेज प्यास लगी थी। वह पानी की खोज में यहां-वहां भटकने लगी। कुछ ही देर में वह एक नदी के पास पहुंच गई। लेकिन चींटी सीधे उस नदी में नहीं जा सकती थी। इस वजह से वह एक छोटे से पत्थर पर चढ़ गई और वहीं से झुककर नदी का पानी पीने की कोशिश करने लगी। जैसे ही चींटी पानी पीने के लिए नीचे की तरफ झुकी वह नदी में गिर गई। उसी नदी के किनारे एक पेड़ पर बैठा कबूतर यह सब देख रहा था। उसे चींटी की हालत पर दया आ गई और उस कबूतर ने चींटी को बचाने की योजना बनाई। उसने जल्दी से पेड़ की डाली से एक पत्ता तोड़कर नदी के पानी में बह रही चींटी के पास फेंक दिया। चींटी उस पत्ते पर चढ़कर बैठ गई और जब वह पत्ता नदी के किनारे पहुंचा, तो वह पत्ते से कूदकर जमीन पर आ गई। चींटी ने अपनी जान बचाने के लिए कबूतर को धन्यवाद किया और वहां से चली गई। कुछ दिनों के बाद उसी नदी के किनारे एक शिकारी आया। उसने कबूतर के घोंसले के पास अपना जाल बिछा दिया। जाल पर दाने फैलाकर वह पास के एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया। कबूतर शिकारी और उसके जाल को नहीं देख सका। उसने जमीन पर जब दाना देखा, तो वह उसे चुगने के लिए नीचे उतर गया और शिकारी के जाल में फंस गया। उसी समय चींटी भी वहां आ गई थी। उसने कबूतर को शिकारी के जाल में फंसता हुआ देख लिया था। बेचारा कबूतर लाख प्रयास करने के बाद भी शिकारी के जाल से नहीं निकल पाया। इसके बाद शिकारी आया और जाल में फंसे कबूतर को उठाकर चलने लगा। तभी चींटी ने कबूतर की जान बचाने का फैसला किया। चींटी दौड़ती हुई आई और उसने शिकारी के पैर में काटना शुरू कर दिया। चींटी के काटने के कारण शिकारी को बहुत तेज दर्द होने लगा। उसने जाल को नीचे फेंक दिया और अपना पैर साफ करने लगा। इसी बीच मौका पाते ही कबूतर जाल से निकल गया और वह तेजी से उड़ गया। इस तरह चींटी ने कबूतर की जान बचा ली।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — सप्तम भाव में चंद्रमा का गोचर व्यापारिक साझेदारों के साथ तालमेल बेहतर करेगा। नए सौदों में लाभ होगा। दफ्तर में सहयोगियों का समर्थन मिलेगा।

वृषभ — छठे भाव में चंद्रमा होने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नौकरी-पेशा लोगों के लिए दिन अच्छा है। अटके हुए काम पूरे होंगे, कर्ज चुकाने में आसानी होगी।

मिथुन — पंचम भाव का चंद्रमा बौद्धिक कार्यों, कला और मीडिया से जुड़े लोगों को बड़ी सफलता दिलाएगा। व्यापार में नए विचारों से बड़ा फायदा होगा। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी।

कर्क — चतुर्थ भाव में चंद्र गोचर से घरेलू कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। प्रॉपर्टी से जुड़ा काम बन सकता है। कार्यक्षेत्र में मन थोड़ा विचलित रह सकता है, एकाग्रता बनाए रखें।

सिंह — तृतीय भाव का चंद्रमा आपके पराक्रम और आत्मविश्वास में वृद्धि करेगा। छोटी यात्राएं लाभदायक रहेंगी। व्यापार विस्तार की योजनाएं सफल होंगी।

कन्या — द्वितीय भाव में चंद्रमा होने से वाणी से लाभ होगा। बैंकिंग व सेल्स क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ मिलेगा। व्यापार में अटका हुआ धन वापस आ सकता है।

तुला — आपकी ही राशि में चंद्रमा का गोचर होने से मानसिक शांति और आकर्षण बढ़ेगा। कार्यक्षेत्र में आपके फैसलों की तारीफ होगी, नई जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक — द्वादश भाव में चंद्रमा होने से अनावश्यक भागदौड़ और मानसिक तनाव रह सकता है। विदेशी स्रोतों या दूर के व्यापार से लाभ मिलने की संभावना है।

धनु — एकादश भाव में चंद्रमा का गोचर बड़े आर्थिक लाभ और इच्छाओं की पूर्ति का योग बना रहा है। व्यापार में बड़े क्लाइंट्स से फायदा होगा, करियर में पदोन्नति के संकेत हैं।

मकर — दशम भाव में चंद्रमा के प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। कारोबार में नए सौदे फाइनल होंगे, सरकारी काम पूरे होंगे।

कुम्भ — नवम भाव में चंद्रमा का गोचर भाग्य का पूरा साथ दिलाएगा। धार्मिक या व्यावसायिक यात्रा संभव है। उच्च शिक्षा व रिसर्च से जुड़े लोगों को बड़ी सफलता मिलेगी।

मीन — अष्टम भाव में चंद्रमा होने से कार्यों में अचानक रुकावटें आ सकती हैं। जोखिम लेने से बचें। व्यापारिक मामलों में जल्दबाजी में निर्णय न लें, कागजी कार्रवाई ध्यान से करें।

टोरंटो में श्रेया घोषाल की आवाज पर झूमे फैंस

श्रेया घोषाल ने हाल ही में कनाडा के टोरंटो में हुए अपने कॉन्सर्ट को लेकर फीलिंग्स शेयर की। उन्होंने बताया कि वहां दर्शकों का प्यार और जबरदस्त रिस्पॉन्स देखकर वह इतनी इमोशनल हो गईं कि कॉन्सर्ट के बाद उन्हें लगा कि शायद वह पूरी रात सो नहीं पाएंगी।

श्रेया ने इंस्टाग्राम पर कॉन्सर्ट की कुछ तस्वीरें शेयर करते हुए फैंस का दिल से शुक्रिया अदा किया। उन्होंने कैप्शन में लिखा, टोरंटो, यह शहर कुछ और ही था। यह एक ऐसी रात थी, जिसे मैं लंबे समय तक याद रखूंगी। इस शहर ने मुझे इतना इमोशनल कर दिया है कि इस जोश के बाद मुझे नहीं लगता कि आज रात मैं सो पाऊंगी।

सिंगर ने आगे अपने फैंस को उनके जबरदस्त रिस्पॉन्स और कॉन्सर्ट में दिखाई गई एनर्जी के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने लिखा, तनी बड़ी संख्या में आने और मेरे साथ गाने के लिए शुक्रिया। आप सभी के लिए परफॉर्म करते हुए मैंने बहुत एंजॉय किया। खुद को धन्य और हमेशा आभारी महसूस कर रही हूं। आपकी अनस्टॉपेबल एनर्जी के लिए शुक्रिया। गणपति बप्पा मोरया।

श्रेया ने अपने पोस्ट के साथ कॉन्सर्ट की कई तस्वीरें भी शेयर की हैं। इनमें वह स्टेज पर परफॉर्म करती और अपने हिट गानों से दर्शकों का मनोरंजन करती नजर आ रही हैं। वहीं, सामने मौजूद भीड़ श्रेया का हौसला बढ़ाती दिखाई दे रही है। कई फैंस हाथों में प्लेकार्ड लेकर सिंगर के लिए अपना प्यार जाहिर करते नजर आए। तस्वीरों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि कॉन्सर्ट में बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे और पूरा स्टेडियम श्रेया की आवाज और फैंस के उत्साह से गूंज उठा।

दरअसल, श्रेया घोषाल इन दिनों अपने द अनस्टॉपेबल टूर 2026 के साथ दुनियाभर में म्यूजिक लवर्स से जुड़ रही हैं। यह नॉर्थ अमेरिका में उनका अब तक का सबसे लंबा टूर है। यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और एशिया में शानदार परफॉर्मेंस के बाद अब श्रेया अपने म्यूजिकल सफर को नॉर्थ अमेरिका लेकर पहुंची हैं। सितंबर के दौरान वह अमेरिका और कनाडा के 12 शहरों में परफॉर्म कर रही हैं।

अपने टूर को लेकर श्रेया ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा था, यह टूर मेरे दिल के बहुत करीब है और अनस्टॉपेबल के पूरे सफर में एक खास पड़ाव है। दो दशक से ज्यादा लंबे करियर में यह एक महीने के दौरान नॉर्थ अमेरिका में मेरा सबसे लंबा टूर होगा और मैं सच में यहां वापस आकर बहुत एक्साइटेड हूं।

साजिद और आर बाल्की की अगली फिल्म में नजर आएंगे आमिर खान!

आमिर खान एक नई सुपरहीरो फिल्म के लिए निर्माता साजिद नाडियाडवाला और निर्देशक आर बाल्की के साथ बातचीत कर रहे हैं। क्या अगली फिल्म में सुपरहीरो का किरदार निभाएंगे आमिर?

बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के मुताबिक, निर्माता साजिद नाडियाडवाला और निर्देशक आर बाल्की की अगली फिल्म अभी शुरुआती दौर में है और इसकी स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है। आमिर खान को इस प्रोजेक्ट के लिए अप्रोच किया गया है और उन्होंने इसमें दिलचस्पी भी दिखाई है। हालांकि, उन्होंने अभी फिल्म साइन नहीं की है।

बताया जा रहा है कि आने वाले कुछ महीनों में फिल्म की कहानी, स्क्रीनप्ले और मुख्य किरदार को तैयार करने पर काम किया जाएगा। फिल्म को बड़े स्तर पर बनाने का प्लान है, इसलिए इसके लुक और प्रोडक्शन डिजाइन पर भी खास ध्यान दिया जाएगा।

आमिर खान किसी भी फिल्म को साइन करने से पहले उसकी स्क्रिप्ट पर काफी समय देते हैं। वह तभी किसी प्रोजेक्ट के लिए हां करते हैं, जब उन्हें कहानी पूरी तरह पसंद आती है। ऐसे में इस फिल्म को लेकर भी आमिर और मेकर्स के बीच लगातार बातचीत होने की खबर है। अगर यह फिल्म बनती है तो यह आमिर खान की साजिद नाडियाडवाला और आर बाल्की के साथ पहली फिल्म होगी। आमिर और साजिद काफी समय से दोस्त हैं, लेकिन दोनों ने अब तक साथ में किसी फिल्म पर काम नहीं किया है।

वहीं, आर बाल्की अपनी अलग तरह की फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने 'चीनी कम', 'पा', 'की एंड का', 'पैडमैन' और 'चुप: रिवेंज ऑफ द आर्टिस्ट' जैसी फिल्मों का निर्देशन किया है। ऐसे में आमिर के साथ उनका सुपरहीरो प्रोजेक्ट इस जॉनर से कुछ अलग हो सकता है। आमिर की फिलहाल पक्की फिल्म 'ललकारा' है, जिसका निर्देशन आशुतोष गोवारिकर कर रहे हैं। यह पीरियड स्पोर्ट्स ड्रामा 1952 की चर्चित भारत-पाकिस्तान टेस्ट सीरीज पर आधारित है। इसकी शूटिंग नवंबर 2026 में शुरू होने की उम्मीद है।

इसके बाद आमिर के राजकुमार हिरानी की '3 इडियट्स' के सीक्वल पर काम करने की भी खबर है।

गणेश चतुर्थी : सितारों ने फैंस को दी गणपति उत्सव की शुभकामना

उन्होंने अपनी कुछ फोटोज साझा किए हैं, जिनमें वे महाराष्ट्रियन लुक में नजर आ रही हैं। इसके साथ उन्होंने फैंस को शुभकामना दी हैं। अभिनेत्री काजोल और शरवरी ने भी गणेश चतुर्थी सेलिब्रेशन की फोटोज साझा करते हुए फैंस को शुभकामनाएं दी हैं।

कल गणेश चतुर्थी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस दिन श्रद्धालु अपने घर बप्पा की प्रतिमा घर लेकर आते हैं। दस दिनों तक यह उत्सव चलता है और भगवान गणेश की पूजा अर्चना होती है। इसके बाद विसर्जन के साथ बप्पा को विदाई दी जाती है। कई फिल्मी सितारे भी इस पर्व को पूरी श्रद्धा से मना रहे हैं। कुछ ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए फैंस को शुभकामनाएं दी हैं।

करीना कपूर खान के घर हर साल गणपति बिठाए जाते हैं। सैफ और करीना अपने बच्चों के साथ गणपति उत्सव मनाते हैं। आज गणेश चतुर्थी पर करीना कपूर के छोटे बेटे जेह ने घर पर ही बप्पा की प्रतिमा बनाई है। सैफ अली खान ने भी बेटे की मदद की। करीना ने कुछ झलकियां अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर की हैं और लिखा है, जेह बाबा ने बनाई है यह प्रतिमा। आप सभी को गणेश चतुर्थी की शुभकामना।

बॉलीवुड के खिलाड़ी अक्षय कुमार ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर पोस्ट शेयर करते हुए फैंस को गणेश चतुर्थी की शुभकामना दी है। बता दें कि अक्षय कुमार इन दिनों फिल्म हैवान को लेकर चर्चा में हैं। 11 सितंबर को रिलीज हुई यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खास प्रदर्शन नहीं कर रही है। सिंगर कैलाश खेर ने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने कुछ फोटोज साझा किए हैं, जिनमें वे भगवान गणपति की प्रतिमा के आगे हाथ जोड़े खड़े हैं। इसके साथ लिखा है? गं गणपतये नमः। अभिनेता सोनू सूद हर साल अपने घर गणेश चतुर्थी पर बिप्पा को बिठाते हैं। इस बार भी वे प्रतिमा लेकर आए हैं। अभिनेता की वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है, जिसमें वे गणपति की पूजा-आरती करते दिख रहे हैं। साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन ने भी फैंस को शुभकामाएं दी हैं और जीवन में खुशहाली की कामना की है। माधुरी दीक्षित ने भी फैंस को बधाई दी है।

मॉडल और अभिनेत्री उर्फी जावेद ने भी गणपति उत्सव की बधाई दी है।

सियासी छांव में नगर पालिका में लहलहा रही फर्जीवाड़े की पौध

आगामी विस चुनाव में पालिका का भ्रष्टाचार बन सकता है बड़ा मुद्दा

» महमूदाबाद नगर पालिका में फर्जीवाड़े के आरोपों को लेकर नागरिकों में बढ़ता जा रहा आक्रोश

» ईओ की पैरवी से खुद की सियासी जमीन को बंजर तो विपक्ष की पिच कहीं कर न दें मजबूत

वली चौधरी/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सीतापुर। महमूदाबाद नगर पालिका में फर्जीवाड़े के मंसूबे कोई नई बात नहीं हैं। अगर बुनियाद खोदकर देखा जाए तो मलबे में भ्रष्टाचार से सनी कई ईंटें निकलेंगी। दिलचस्प बात तो यह है कि इन दिनों पालिका में फैला भ्रष्टाचार अब सियासी रंग लेता जा रहा है। गहराते मामले के बीच पालिका में फैले भ्रष्टाचार का मकड़जाल आगामी विधानसभा चुनाव में न सिर्फ बड़ा मुद्दा बनकर उभर सकता है, बल्कि एक बड़े दल के प्रत्याशी की राह में रोड़ा भी साबित हो सकता है।

लंबे समय से पालिका में फर्जीवाड़े की शिकायतों के बाद भी कार्रवाई तो दूर, जांच का भी हाशिये पर चला जाना नागरिकों को हैरान कर रहा है। नागरिकों का गुस्सा और गुबार सोशल मीडिया पर तीखी टिप्पणियों में देखने को मिल रहा है। इन सबके बीच बड़ा सवाल हर एक की जुबान पर यह है कि निकाय से जुड़े अधिशासी अधिकारी पर इतने गंभीर आरोपों के बावजूद आखिर कार्रवाई तो दूर, जांच तक सही से क्यों नहीं हो पा रही है। इसके अलावा वह कौन सियासतदान है जो इस अधिकारी को संरक्षण दे रहा है। ऐसे में राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि भ्रष्टाचारी अधिकारी की करतूतों को सियासी पुश्तपनाही से दबाया तो जा सकता है, मगर उसे कार्रवाई की जद में आने से बचाया नहीं जा सकता। एक सियासी हुक्मरान का राजधानी तक इस ईओ की पैरवी करना उसकी सियासी जमीन को अभी से बंजर कर रहा है। ऐसे में इसका फायदा विपक्ष के एक बड़े सियासतदान को भी मिल रहा है। सत्तारूढ़ नुमाइंदे की नादानी विपक्ष के इस संभावित प्रत्याशी की सियासी पिच अभी से तैयार कर रही है, जिसका उसे आगामी विधानसभा चुनाव में खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि ईओ की बेईमानी पर पर्दा डालने अथवा पैरवी के लिए जो दौड़ाभागी में सरकारी ईंधन फूंका जा रहा है, उससे क्षणिक आर्थिक लाभ भले मिल जाए, मगर विपक्ष को इसका सियासी माइलेज जरूर मिल रहा है।

जांच रिपोर्ट पर टिकी आगे की कार्रवाई

डीएम डॉ. राजा गणपति द्वारा एसडीएम महमूदाबाद अभिषेक प्रियदर्शी को जांच अधिकारी नामित किए जाने के बाद अब सभी की निगाहें जांच रिपोर्ट पर टिकी हैं। सूत्रों के मुताबिक जांच में शिकायतों की पुष्टि होने और वित्तीय अनियमितता अथवा फर्जीवाड़ा सामने आने पर संबंधित अधिशासी अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई के लिए शासन को संस्तुति भेजी जा सकती है। ऐसे में आउटसोर्सिंग भुगतान, टेंडर, स्ट्रीट लाइट, डीजल खर्च और निर्माण कार्यों से जुड़े आरोपों की जांच के निष्कर्ष इस पूरे प्रकरण में निर्णायक साबित हो सकते हैं।

सूची वायरल करने में भी 'खेल'!

सोशल मीडिया पर जब लोगों ने सवाल उठाए तो ईओ ने आउटसोर्स कर्मचारियों की सूची खुद ही वायरल कर दी। हैरतअंगेज बात तो यह रही कि ईओ ने जो आउटसोर्स कर्मचारियों की सूची वायरल की, उसमें कर्मचारियों की वल्दियत और पता हटा दिया गया। इतना ही नहीं, जिनके नाम संदिग्ध थे, उनके नामों में भी छेड़छाड़ करते हुए उपनाम हटा दिए गए। बड़ा सवाल यह है कि जब सब कुछ ठीक-ठाक था तो इस तरह सूची में छेड़छाड़ करने का क्या मतलब था। और हड़बड़ाहट में इसे खुद व्हाट्सएप समूहों पर वायरल करने का औचित्य क्या था। आखिर इसे किसी और से भी वायरल कराया जा सकता था। खास बात यह है कि यह सब उस वक्त किया गया, जब डीएम की ओर से फटकार लगाई गई थी। इसके बावजूद सूची में छेड़छाड़ किए जाने को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं।

आउटसोर्स कर्मियों की जांच में सीसीटीवी और जीपीएस से खुल सकता है राज

आउटसोर्स कर्मचारियों के नाम पर कथित फर्जी भुगतान की शिकायत की जांच में सिर्फ कागजों में दर्ज उपस्थिति देखना पर्याप्त नहीं होगा। यदि आरोपों के मुताबिक संदिग्ध कर्मचारी वास्तव में काम कर रहे थे तो उनकी कार्यस्थल पर मौजूदगी का डिजिटल रिकॉर्ड भी सामने आना चाहिए। इसके लिए संबंधित अवधि की जीपीएस लोकेशन वाली फोटो, मोबाइल से दर्ज उपस्थिति, उपस्थिति रजिस्टर और भुगतान संबंधी अभिलेख का मिलान कराया जा सकता है। इसके अलावा यह भी जांच का अहम हिस्सा हो सकता है कि जिन कर्मचारियों की उपस्थिति पालिका कार्यालय में दर्ज हुई, वे वास्तव में वहां पहुंचे भी थे या नहीं। इसके लिए संबंधित अवधि की नगर पालिका में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज से उनके चेहरे और आवाजाही का मिलान कराया जा सकता है। जिन कर्मचारियों की मौके पर तैनाती बताई गई है, उनके संबंधित कार्यस्थल के पर्यवेक्षक की रिपोर्ट, मस्टर रोल, उपस्थिति और भुगतान रिकॉर्ड का भी आपस में मिलान कराया जाए तो कागजों पर मौजूद और वास्तव में काम करने वाले कर्मचारियों के बीच का फर्क सामने आ सकता है।

भारत और अफगानिस्तान का दूसरा टी20 मैच आज

» सैमसन की जगह वैभव और चोटिल वरुण की जगह रवि बिश्नोई को मिल सकता है मौका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय टीम ने पहले टी20 मुकाबले में अफगानिस्तान को एकतरफा अंदाज में हराया। भारत के लिए इस मैच में गेंदबाजी से लेकर बल्लेबाजी तक सब ठीक रहा। लेकिन अब जब दोनों टीमों के बीच मंगलवार को दूसरा टी20 खेला जाएगा तो एक बार फिर नजर इस पर होगी कि संजू सैमसन और वैभव सूर्यवंशी में से किसे एकादश में मौका मिलेगा। पहले टी20 में सैमसन ने ओपनिंग की, लेकिन वह सस्ते में आउट हो गए। लेकिन अभिषेक शर्मा और ईशान किशन ने दूसरे विकेट के लिए मजबूत साझेदारी कर टीम इंडिया को आसानी से जीत दिलाई।

लेकिन सैमसन के प्रदर्शन को देखते हुए वैभव की प्लेइंग-11 में वापसी की उम्मीदें मजबूत हुई। लेकिन सवाल यही है कि क्या टीम प्रबंधन एक मैच के बाद ही संजू को बाहर करेगा। लेकिन वरुण चक्रवर्ती की चोट के बाद एकादश में परिवर्तन तय है। श्रेयस अय्यर की टीम ने पहले मैच में हर मोर्चे पर शानदार प्रदर्शन किया। हार्दिक पांड्या के चोटिल होने के कारण भारतीय टीम में पांचवें विश्वसनीय गेंदबाजी विकल्प की कमी महसूस हो रही है। अर्शदीप ने 19 रन देकर तीन विकेट लिए और अफगानिस्तान को आठ विकेट पर 156 रन पर रोकने में अहम भूमिका निभाई। वहीं, दूसरे टी20 से एक दिन पहले वरुण फिर चोटिल हो गए और सीरीज से बाहर हो गए। अब उनकी जगह रवि बिश्नोई प्लेइंग-11 में शामिल हो सकते हैं। लेकिन भारत को इस महीने के आखिर में होने वाले एशियाई खेलों से पहले पांचवें गेंदबाज की समस्या का समाधान करना होगा। अय्यर को उस स्थान की भरपाई करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी क्योंकि ऑलराउंडर शिवम दुबे और नीतीश कुमार रेड्डी अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर सके।

वरुण चक्रवर्ती अफगानिस्तान सीरीज से बाहर

टी20 सीरीज के दूसरा मुकाबले से पहले टीम इंडिया को बड़ा झटका लगा है। टीम के स्टार स्पिनर वरुण चक्रवर्ती चोटिल हो गए हैं। वरुण इस कारण तीनों मैचों की इस सीरीज से बाहर हो गए हैं। वरुण रविवार को खेले गए पहले टी20 मैच में भारतीय प्लेइंग-11 का हिस्सा थे। वरुण इस महीने होने वाले एशियाई खेलों के लिए भारतीय टीम का हिस्सा हैं, लेकिन अब चोटिल होने के कारण उनका एशियाड में हिस्सा लेना मुश्किल हो गया है। बीसीसीआई के सूत्र ने बताया कि वरुण को ताजा चोट लगी है और वह सीरीज से बाहर हो गए हैं। खिलाड़ियों की लगातार चोट से सीओई का चोट प्रबंधन सवालों के घेरे में है और वरुण अब नया उदाहरण बन गए हैं। एशियाई खेलों का आयोजन 19 सितंबर से होना है और तब तक वरुण फिट हो पाते हैं या नहीं ये देखने वाली बात होगी।

यूसीसी एक असंवैधानिक व्यवस्था : इलानगोवन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के वरिष्ठ नेता टी. के. एस. इलानगोवन ने यूसीसी लागू करने संबंधी बयानों को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर निशाना साधा और इसे 'असंवैधानिक' करार दिया। इलानगोवन ने मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय की लंदन यात्रा को लेकर राज्य सरकार से पूरी पारदर्शिता बरतने की भी मांग की।

उन्होंने कहा कि भाजपा द्वारा शासित राज्यों में यूसीसी लागू करना संविधान द्वारा दिए गए मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। उन्होंने कहा, यह भारत के संविधान के खिलाफ है। वे इसे लागू नहीं कर सकते, क्योंकि संविधान का अनुच्छेद 25 प्रत्येक भारतीय को मौलिक अधिकार के तहत किसी भी धर्म को मानने, उसका प्रचार करने और उसका पालन करने का पूरा अधिकार देता है।

बिहार के बाढ़ प्रभावितों को मिले राहत : राहुल

» कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने राहत कार्य में जुटने की अपील की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बिहार में आई बाढ़ पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए पार्टी कार्यकर्ताओं से पीड़ितों की मदद में जुटने का आह्वान किया है। दोनों नेताओं ने सरकार से राहत और बचाव अभियान में तेजी लाने तथा प्रभावित परिवारों तक अविलंब सहायता पहुंचाने की मांग की। राज्य के 15 जिलों में करीब 50 लाख लोग इस प्राकृतिक आपदा से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं।

खरगे और राहुल ने बिहार में बाढ़ से हुए जानमाल के नुकसान पर मंगलवार को दुख जताया तथा पार्टी के कार्यकर्ताओं से प्रभावित लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ाने अपील की। खरगे ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, बिहार में बाढ़ से हुई जनहानि अत्यंत पीड़ादायक है। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। उन्होंने कहा कि 15 जिलों में करीब 50 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं और हजारों गांवों में जनजीवन अस्त-व्यस्त है।

बहन का नाम हटने पर बिफरे सिब्बल

» कहा- चुनाव आयोग पीएम को बता रहा है एसआईआर में नाम हटा या बढ़ा रहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सीनियर एडवोकेट और नेता कपिल सिब्बल ने चुनाव आयोग की ओर से चलाए जा रहे एसआईआर की आलोचना की है। सिब्बल ने कहा कि उनकी बहन का नाम वोटर लिस्ट से हटा दिया गया था। सिब्बल ने कहा कि इसी तरह, जजों और विदेशी राजनयिकों के नाम भी हटाए गए लोगों की लिस्ट में पाए गए हैं। केरल के कोच्चि में ऑल इंडिया लॉयर्स यूनियन की ओर से शनिवार को आयोजित हॉर्स-ट्रेडिंग और लोकतंत्र पर कार्यक्रम में कपिल सिब्बल सवालों के जवाब दे रहे थे।

उन्होंने बताया कि बड़े पैमाने पर नाम हटाए गए हैं, लेकिन बहुत कम लोगों ने ही अपना नाम दोबारा जुड़वाने के लिए फॉर्म भरा है, क्योंकि उन्हें डर है कि उन्हें परेशान किया जाएगा। बड़े पैमाने पर नाम हटाए गए हैं, लेकिन बहुत कम लोगों ने ही अपना नाम दोबारा जुड़वाने के लिए फॉर्म भरा है, क्योंकि उन्हें डर है कि उन्हें परेशान किया जाएगा। सिब्बल ने कहा- हमें जमीनी हकीकत पता है। हमें पता है कि बड़े पैमाने पर नाम हटाए जा रहे हैं। यह पूरी प्रक्रिया चुनाव आयोग के अपने तौर-तरीकों के खिलाफ है। 1950 के बाद से कभी किसी को फॉर्म भरने की जरूरत नहीं पड़ी थी। अब एक स्कूल टीचर, जो बीएलओ (बूथ लेवल ऑफिसर) होता है, वोटर लिस्ट में किसी के नाम के आगे डी यानी डाउटफुल (संदिग्ध) लिख देता है, और वह वोटर वोट नहीं डाल पाता।

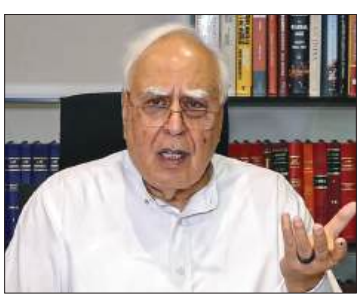

फॉर्म भरने की हिम्मत नहीं जुटा पाते लोग

सिब्बल ने आगे कहा कि एसआईआर किसी को संदिग्ध वोटर बताना न तो किसी आधार पर होता है और न ही वोटर को यह बताया जाता है कि उसे संदिग्ध वोटर क्यों माना गया है। उन्होंने कहा-विदेश सेवा में काम करने वाले लोग भी संदिग्ध वोटर की श्रेणी में हैं, ऐसे जज हैं जिनके नाम लिस्ट में नहीं हैं, आम लोग हैं, सेना के जवान हैं और मेरी अपनी बहन का नाम भी लिस्ट में नहीं है। ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके नाम लिस्ट में नहीं हैं। अब उन्हें फॉर्म भरना होगा। भारत में जिस तरह की सामाजिक असमानता है, लोग फॉर्म भरने की हिम्मत नहीं जुटा पाते क्योंकि उन्हें डर होता है कि उन्हें परेशान किया जाएगा। सिब्बल ने कहा-कई मामलों में, खास समुदायों के लोगों के नाम बड़े पैमाने पर हटा दिए जाते हैं, तो ऐसे में वे कहां जाएं? इस समस्या को सुलझाने के लिए कोई तेज प्रक्रिया नहीं है। हर कोई सुप्रीम कोर्ट आकर यह नहीं कह सकता कि हमारे मामले का फैसला करें, उनके पास इसके लिए जरूरी साधन नहीं हैं।

बिजली विभाग की लापरवाही से लोगों को लग रहा झटका

» बिजली मीटर की रीडिंग लेने नहीं आ रहा रीडर

» 3-3 महीने का बिल एक साथ भेज बिगाड़ रहा उपभोक्ताओं का बजट

» शिकायतों को गंभीरता से नहीं लेते अधिकारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आजकल यूपी के लोग बिजली कटौती व बढ़े बिल को लेकर ही परेशान नही हैं वे इसलिए भी बिजली विभाग के शोषण के शिकार हो रहे क्योंकि उन्हें समय से बिजली बिल नहीं मिल रहा है। बिल भी ऐसा मिल रहा है कि आम उपभेक्ताओं का बजट बिगाड़ दे रहा है।

बिजली का बिल समय पर मिले, मीटर की सही रीडिंग दर्ज हो और उपभोक्ता को जितनी बिजली इस्तेमाल की है, उतने की ही राशि का भुगतान करना पड़े-यह हर बिजली उपभोक्ता की सामान्य अपेक्षा है। लेकिन कई उपभोक्ताओं की शिकायतें ऐसी हैं, जो बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। कई इलाकों में उपभोक्ताओं का कहना है कि बिजली मीटर की रीडिंग लेने के लिए विभाग का कर्मचारी समय पर नहीं पहुंचता। मीटर घर के बाहर लगा हो या परिसर में, रीडिंग लेने की व्यवस्था नियमित दिखाई नहीं देती। ऐसे में उपभोक्ता खुद मीटर की रीडिंग लेकर विभाग तक पहुंचाने की कोशिश करते हैं, लेकिन उनकी शिकायत है कि रीडिंग देने के बावजूद समय पर बिल जनरेट नहीं होता।

शिकायत करने के बाद विभाग की ओर से अनदेखी

सबसे बड़ी परेशानी तब सामने आती है, जब लंबे समय तक बिल नहीं आता और शिकायत करने के बाद विभाग की ओर से दो या तीन महीने की खपत का बिल एक साथ भेज दिया जाता है। जिस बिजली का भुगतान उपभोक्ता हर महीने थोड़ा-थोड़ा करके आसानी से कर सकता था, वही रकम एक साथ आने पर परिवार के बजट पर भारी पड़ने लगती है।

ये लापरवाही है या व्यवस्था की कोई कमी?

यहां सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर मीटर की रीडिंग समय पर क्यों नहीं ली जा रही? यदि विभाग के पास उपभोक्ता की मीटर रीडिंग उपलब्ध नहीं हो पा रही है, तो इसकी जिम्मेदारी किसकी है? और यदि उपभोक्ता स्वयं रीडिंग उपलब्ध करा रहा है, तो उसके आधार पर समय पर बिल क्यों नहीं बन रहा?इन सवालों का जवाब बिजली विभाग को देना चाहिए। यह भी जांच का विषय है कि कहीं रीडिंग लेने, बिल बनाने और उसे उपभोक्ता तक पहुंचाने की प्रक्रिया में कोई तकनीकी या प्रशासनिक गड़बड़ी तो नहीं है। बिना ठोस प्रमाण के किसी तरह के भ्रष्टाचार या खेल का आरोप लगाना उचित नहीं होगा, लेकिन लगातार सामने आ रही शिकायतों की निष्पक्ष जांच जरूर होनी चाहिए।

एक साथ बिल भेजना उपभोक्ता को देता है तनाव

मान लीजिए किसी परिवार का सामान्य बिजली बिल हर महीने 1,500 रुपये आता है। यदि तीन महीने तक नियमित बिल नहीं आता और अचानक 4,500 रुपये का बिल भेज दिया जाता है, तो मध्यम और निम्न आय वर्ग के परिवार के लिए यह रकम अचानक जुटाना मुश्किल हो सकता है।समस्या सिर्फ रकम की नहीं है। कई बार लंबे अंतराल के बाद बिल आने पर उपभोक्ता को यह समझना भी मुश्किल हो जाता है कि किस महीने कितनी यूनिट खपत हुई और किस आधार पर बिल तैयार किया गया।ऐसे में विभाग को उपभोक्ताओं को स्पष्ट विवरण देना चाहिए और यदि देरी विभागीय स्तर पर हुई है, तो उसका आर्थिक बोझ सीधे उपभोक्ता पर नहीं पड़ना चाहिए।

उपभोक्ताओं की गुहार

मीटर की रीडिंग समय पर और नियमित रूप से ली जाए। उपभोक्ता द्वारा दी गई मीटर रीडिंग को रिकॉर्ड में शामिल करने की व्यवस्था सरल हो।रीडिंग लेने के बाद बिल समय पर जनरेट हो।लंबे अंतराल के बाद बिल भेजने की स्थिति में उपभोक्ता को स्पष्ट कारण बताया जाए। गलत या अनावश्यक रूप से बढ़े हुए बिल की शिकायत का समयबद्ध निस्तारण हो।विभागीय देरी के कारण एक साथ भारी बिल आने पर उपभोक्ता को उचित राहत और भुगतान विकल्प दिए जाएं।बिजली उपभोक्ता अपना बिल देने से पीछे नहीं हटता। वह सिर्फ इतना चाहता है कि उसे सही मीटर रीडिंग के आधार पर समय पर और पारदर्शी बिल मिले। अगर विभाग का कर्मचारी रीडिंग लेने नहीं आता, उपभोक्ता खुद रीडिंग देने की कोशिश करता है और फिर भी समय पर बिल नहीं बनता, तो यह निश्चित रूप से व्यवस्था की गंभीर समस्या है।

रीडिंग की पारदर्शी व्यवस्था नहीं?

आज जब तकनीक के माध्यम से बिजली मीटर की रीडिंग, बिलिंग और भुगतान की पूरी प्रक्रिया को डिजिटल बनाया जा सकता है, तब भी यदि उपभोक्ता को बार-बार बिजली विभाग के कार्यालय के चक्कर लगाने पड़ें, तो यह व्यवस्था पर सवाल खड़ा करता है।

कर्नाटक में दो हादसों में सात की मौत

» फ्रिज फटने से चार लोगों ने गंवाई जान, दूध टैंकर की टक्कर में तीन की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बंगलूरू। कर्नाटक में मंगलवार को दो अगल-अलग घटनाओं में सात लोगों की मौत हो गई। पहली घटना रेफ्रिजरेटर फटने से हुई है। वहीं, दूसरी घटना दूध के टैंकर ने पीछे से एक मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि बेलगावी एक घर में कथित तौर पर रेफ्रिजरेटर फटने से एक ही परिवार के चार सदस्यों की मौत हो गई। वहीं, दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्होंने बताया कि यह घटना सोमवार देर रात चावत गली में घटी।

पुलिस ने बताया कि मृतकों की पहचान गजानन धमोणे (65), रोशन धमोणे (21), शारदा धमोणे (45) और भारती धमोणे (5०) के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि इस घटना में प्रिया धामोने (28) और गंगा धामोने (25) गंभीर रूप से घायल हो गईं और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है। वहीं, मांड्या जिले में मंगलवार तड़के एक दूध के टैंकर ने पीछे से एक मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी, जिससे एक ही परिवार के तीन सदस्यों की मौत हो गई, जिनमें एक नौ वर्षीय बच्ची भी शामिल थी। पुलिस ने बताया कि यह दुर्घटना मांड्या जिले के मद्दूर तालुक के अंतर्गत कोप्पा पुलिस स्टेशन क्षेत्र में सुबह 5.3० बजे से 6 बजे के बीच हुई।

बंगाल में उपचुनाव, तेज हुआ सियासी टकराव

» कांग्रेस ने ममता बनर्जी को दिया झटका

» उपचुनाव में गठबंधन के लिए दीदी की पार्टी का प्रस्ताव ठुकराया

» भाजपा ने भी साधे टीएमसी पर निशाने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में उपचुनाव से पहले एक बार फिर से सियासत गरमा गई है। जहां टीएमसी व भाजपा में टकराव जारी है। पर अब एक नई टकराहट देखने को मिली रही है इसबार इसकी वजह बीजेपी नहीं है बल्कि इंडिया गठबंधन के ही दो पार्टनर टीएमसी और कांग्रेस है। दरअसल, टीएमसी ने कांग्रेस को उपचुनाव में गठबंधन का प्रस्ताव दिया जिसे कांग्रेस ने सीधे ठुकरा दिया। अब देखने वाली बात होगी कि बंगाल की राजनीति किस ओर करवट लेती है। वहीं एक नजारा और देखने को मिल रहा है कि टीएमसी के बागी गुट वाले पूर्व सीएम ममता बनर्जी के लिए अपनी सीट छोड़नें को तैयार भी हो गए हैं।

बंगाल में होने वाले उपचुनावों के लिए टीएमसी के ममता बनर्जी गुट ने कांग्रेस के साथ गठबंधन करने की कोशिश की, लेकिन कांग्रेस के अकेले चुनाव लड़ने के फैसले के कारण यह कोशिश कामयाब नहीं हो सकी। टीएमसी ने नंदीग्राम और रेजीनगर में अपने उम्मीदवारों के नामों का ऐलान तब किया, जब कांग्रेस पहले ही अपने उम्मीदवारों के नाम घोषित कर चुकी थी।

टीएमसी ने उपचुनावों में तालमेल बिठाने के लिए कांग्रेस से संपर्क किया था। प्रस्ताव यह था कि कांग्रेस नंदीग्राम से चुनाव लड़े और तृणमूल रेजीनगर से। हालांकि, सूत्रों का कहना है कि बंगाल कांग्रेस इस प्रस्ताव पर सहमत नहीं हुई क्योंकि वह राज्य में अपना आधार फिर से मजबूत करना चाहती है और अभी गठबंधन करने से यह प्रक्रिया कमजोर पड़ सकती है।

प. बंगाल उपचुनाव 2 सीटों पर

पश्चिम बंगाल में नंदीग्राम और रेजीनगर विधानसभा सीट पर 6 अक्टूबर 26 को उपचुनाव होने वाला है। वहीं, 9 अक्टूबर 26 को काउंटिंग होगी। इस चुनाव में बीजेपी और टीएमसी के बीच कड़ा मुकाबला माना जा रहा है। अब देखने वाली बात होगी कि लगभग साढ़े 4 महीने बाद बंगाल में सियासी माहौल बदला है या नहीं।

नंदीग्राम से शुभेंदु अधिकारी तो रेजीनगर से हुमायूं कबीर ने दिया इस्तीफा

बता दें कि पश्चिम बंगाल की नंदीग्राम सीट से मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने इस्तीफा दिया था। वह कोलकाता के भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र से भी निर्वाचित हुए थे। वहीं, मुर्शिदाबाद जिले की रेजीनगर सीट से आम जनता उन्नयन पार्टी के नेता हुमायूं कबीर ने चुनाव जीता था। उन्होंने नोदा विधानसभा सीट से भी चुनाव जीता था। बाद में उन्होंने रेजीनगर से इस्तीफा दे दिया था और नोदा विधानसभा के जनप्रतिनिधि के रूप में शपथ ली थी।

गुरुग्राम हिट एंड रन केस का आरोपी गिरफ्तार राजस्थान से पकड़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। गुरुग्राम के गोल्फ कोर्स रोड पर महिला बाइक राइडर को कार से टक्कर मारने के मामले में पुलिस ने आरोपी कल्याण बैसला को राजस्थान के दौसा से हिरासत में ले लिया है। आरोपी को पकड़ने के लिए गुरुग्राम पुलिस की एक टीम राजस्थान पहुंची थी। फिलहाल पुलिस आरोपी को दौसा से गुरुग्राम लेकर आएगी। इसके बाद उससे पूरे मामले को लेकर पूछताछ की जाएगी।

दरअसल, रविवार 13 सितंबर की सुबह गोल्फ कोर्स रोड पर महिला बाइक राइडर को कार से टक्कर मारने का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ था। वीडियो सामने आने के बाद गुरुग्राम पुलिस ने मामले का खुद से संज्ञान लिया और थाना सेक्टर-56 में केस दर्ज किया इसके बाद पुलिस ने आरोपी की पहचान और उसे पकड़ने के लिए जांच तेज कर दी थी।

बिहार में दारोगा भर्ती को लेकर पटना में बवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना । बिहार दरोगा भर्ती, बीपीएससी 7०वीं परीक्षा समेत 13 सूत्री मांगों को लेकर प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों ने मंगलवार को पटना में जमकर प्रदर्शन किया। बड़ी संख्या में छात्र गांधी मैदान से राजभवन मार्च के लिए निकले, लेकिन जेपी गोलंबर के पास पटना पुलिस और सीआरपीएफ की टीम ने उन्हें रोक दिया।

पुलिस की ओर से बैरिकेडिंग लगाए जाने के बाद कुछ छात्र उस पर चढ़ गए और नारेबाजी करने लगे। इससे मौके पर कुछ देर के लिए स्थिति तनावपूर्ण हो गई। गांधी मैदान से राजभवन की ओर बढ़ रहे छात्र-अभ्यर्थियों को जेपी गोलंबर के पास पुलिस ने आगे जाने से रोक दिया। मौके पर पटना पुलिस के साथ सीआरपीएफ की टीम भी तैनात थी। पुलिस की बैरिकेडिंग के बावजूद कुछ छात्र उस पर चढ़ गए और सरकार के खिलाफ नारे लगाने लगे। इसके बाद कुछ छात्र एग्जीबिशन रोड के रास्ते डाक बंगला चौराहे की ओर बढ़ने लगे। हालांकि यहां भी पुलिस टीम ने उन्हें रोक लिया। पुलिस ने छात्रों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए बैरिकेडिंग कर रखी थी। प्रदर्शन कर रहे छात्रों का कहना है कि 1799 पदों पर हुई दरोगा भर्ती परीक्षा में गड़बड़ी हुई थी। इस मामले की जांच आर्थिक अपराध इकाई यानी ईओयू कर रही है, लेकिन अब तक परीक्षा रद्द नहीं की गई है। अभ्यर्थियों का आरोप है कि जब परीक्षा में गड़बड़ी की जांच चल रही है तो इसे रद्द कर दोबारा परीक्षा कराई जानी चाहिए। छात्रों ने बीपीएससी 7० वीं परीक्षा को लेकर भी सवाल उठाए।

यूसीसी को लेकर बिहार में रार, राजद ने दिया जदयू को ऑफर

» भाई वीरेंद्र बोले- भाजपा को लात मारें, साथ मिलकर बनाएं सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। समान नागरिक संहिता (यूसीसी) पर जारी सियासी घमासान के बीच राजद विधायक भाई वीरेंद्र ने जदयू को बड़ा ऑफर दे दिया है। जदयू को उन्होंने सार्वजनिक रूप से कहा है कि आइए, हम और आप मिलकर बिहार में नई सरकार बनाएं और भाजपा जैसी कथित सांप्रदायिक दलों से राज्य की जनता को मुक्ति दिलाएं।

उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार वैसे लोगों को छोड़ें। धर्मनिरपेक्ष राज्य है, यहां सभी को अपना-अपना धर्म मानने का अधिकार है। उन्होंने कहा कि नीतीश के साथ

कुछ ऐसे लोग लगे हुए हैं जो बर्बाद कर रहे हैं। सामाजिक न्याय वाले लोग साथ आएं, भाजपा को लात मारें। इस संदर्भ में जब राजद के शीर्ष नेतृत्व से बात हुई तो उन्होंने गठबंधन के लिए स्पष्ट रूप से कुछ तो नहीं कहा, लेकिन यूसीसी पर एनडीए, विशेषकर भाजपा से उनका मतभेद उभरकर सामने आ गया।

राजद नेतृत्व का कहना है कि भाजपा तत्कालिक और महत्वपूर्ण मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने के लिए यूसीसी जैसे मुद्दे उछालती रही है। बिहार की प्रकृति सर्वधर्म समभाव और सामाजिक सौहार्द की रही है। यहां विभाजनकारी शक्तियों के मंसूबे कभी फलीभूत नहीं हुए और आगे भी नहीं होंगे। सभी धर्म-संप्रदाय को राजद बराबर की दृष्टि से देखता है, और सामाजिक विभाजन के किसी भी प्रयास का विरोध करेगा। उल्लेखनीय है कि बिहार में जदयू के साथ राजद दो बार सत्ता की साझेदारी कर चुका है। वह दोनों दौर मिलाकर लगभग तीन वर्षों की साझेदारी रही है, लेकिन उस दौरान दोनों के अंतर्भेद सार्वजनिक हुए हैं।

और कई एक मुद्दों पर मतभेद इतना गहरा हुआ किसरकार परिवर्तन की नौबत आ गई। दोनों बार मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रहे हैं और जब-जब सत्ता परिवर्तन हुआ, तब-तब वे भाजपा के पाले में आए। उन्होंने कहा है किराजद के गठबंधन कर बिहार में सरकार बनाएं।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा